Mohit

Diksha

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 120933401

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29-30/10/1994	जन्म तिथि	13/12/1996
शनि-रविवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 05:15:07	जन्म समय	19:30:06 घंटे
घटी 56:43:55	जन्म समय(घटी)	30:50:31 घटी
India	देश	India
Naraingarh	स्थान	Shahbad
30:28:30 उत्तर	अक्षांश	30:09:20 उत्तर
77:07:30 पूर्व	रेखांश	76:52:20 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:30	स्थानिक संस्कार	-00:22:31 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:33:33	सूर्योदय	07:10:09
17:35:51	सूर्यास्त	17:23:31
23:47:16	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:53

कन्या	लग्न	मिथुन
बुध	लग्न लग्नाधिपति	बुध
सिंह	राशि	मकर
सूर्य	राशि-स्वामी	शनि
मघा	नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
केतु	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
4	चरण	4
ब्रह्म	योग	ध्रुव
विष्टि	करण	वणिज
मे-मेहर	जन्म नामाक्षर	जी-जीविका
वृश्चिक	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
क्षत्रिय	वर्ण	वैश्य
वनचर	वश्य	जलचर
मूषक	योनि	नकुल
राक्षस	गण	मनुष्य
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 1वर्ष 6मा 14दि	24:48:47	कन्या	लग्न	मिथु	27:19:21	सूर्य 1वर्ष 2मा 22दि
चन्द्र	12:32:10	तुला	सूर्य	वृश्चि	28:02:18	राहु
15/05/2022	10:24:01	सिंह	चंद्र	मक	07:16:14	07/03/2015
14/05/2032	19:38:35	कर्क	मंगल	सिंह	28:21:01	07/03/2033
चन्द्र 15/03/2023	27:01:49	कन्या व	बुध	धनु	18:13:27	राहु 17/11/2017
मंगल 14/10/2023	27:18:14	तुला	गुरु	धनु	27:11:52	गुरु 12/04/2020
राहु 14/04/2025	18:53:10	तुला व	शुक्र	वृश्चि	01:38:16	शनि 17/02/2023
गुरु 14/08/2026	11:59:07	कुंभ व	शनि	मीन	06:53:11	बुध 05/09/2025
शनि 14/03/2028	21:03:10	तुला व	राहु व	कन्या	10:41:17	केतु 24/09/2026
बुध 14/08/2029	21:03:10	मेष व	केतु व	मीन	10:41:17	शुक्र 24/09/2029
केतु 15/03/2030	28:55:52	धनु	हर्ष	मक	08:29:55	सूर्य 18/08/2030
शुक्र 14/11/2031	26:59:35	धनु	नेप	मक	02:22:15	चन्द्र 17/02/2032
सूर्य 14/05/2032	03:20:12	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	09:54:26	मंगल 07/03/2033

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:47:16 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:53

लग्न-चलित

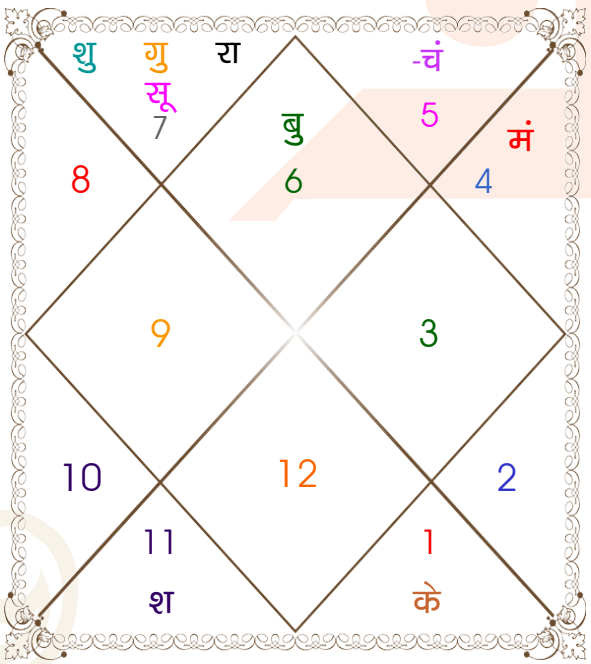

लग्न-चलित

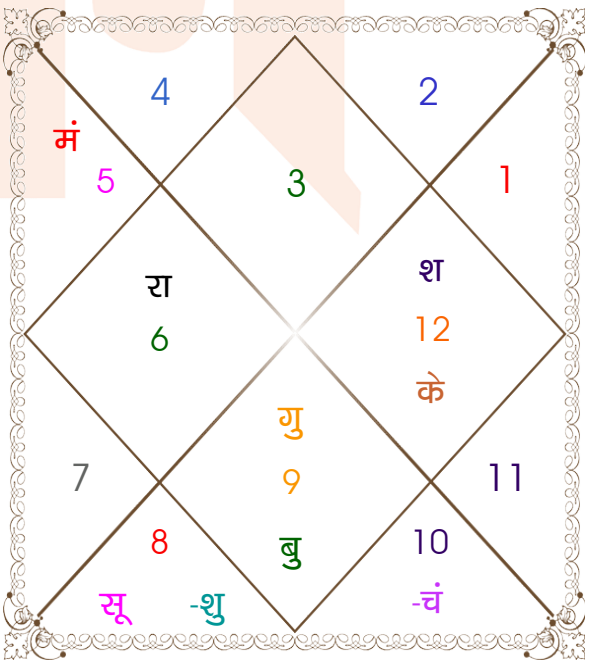

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
कन्या	24:48:47	कन्या	10:01:16	1	मिथु	10:30:33	मिथु	27:19:21
तुला	25:13:44	तुला	10:01:16	2	कर्क	10:30:33	कर्क	23:41:45
वृश्चि	25:38:40	वृश्चि	10:26:12	3	सिंह	06:52:57	सिंह	20:04:09
धनु	26:03:37	धनु	10:51:09	4	कन्या	03:15:21	कन्या	16:26:33
मक	25:38:40	मक	10:51:09	5	तुला	03:15:21	तुला	20:04:09
कुंभ	25:13:44	कुंभ	10:26:12	6	वृश्चि	06:52:57	वृश्चि	23:41:45
मीन	24:48:47	मीन	10:01:16	7	धनु	10:30:33	धनु	27:19:21
मेष	25:13:44	मेष	10:01:16	8	मक	10:30:33	मक	23:41:45
वृष	25:38:40	वृष	10:26:12	9	कुंभ	06:52:57	कुंभ	20:04:09
मिथु	26:03:37	मिथु	10:51:09	10	मीन	03:15:21	मीन	16:26:33
कर्क	25:38:40	कर्क	10:51:09	11	मेष	03:15:21	मेष	20:04:09
सिंह	25:13:44	सिंह	10:26:12	12	वृष	06:52:57	वृष	23:41:45

तारा चक्र

अश्विनी	मूल	मघा	**जन्म**	उत्तराषाढ़ा	कृतिका	उ०फाल्गुनी
भरणी	पूर्वाषाढ़ा	पू०फाल्गुनी	**सम्पत**	श्रवण	रोहिणी	हस्त
कृतिका	उत्तराषाढ़ा	उ०फाल्गुनी	**विपत**	धनिष्ठा	मृगशिरा	चित्रा
रोहिणी	श्रवण	हस्त	**क्षेम**	शतभिषा	आर्द्रा	स्वाति
मृगशिरा	धनिष्ठा	चित्रा	**प्रत्यारि**	पू०भाद्रपद	पुनर्वसु	विशाखा
आर्द्रा	शतभिषा	स्वाति	**साधक**	उ०भाद्रपद	पुष्य	अनुराधा
पुनर्वसु	पू०भाद्रपद	विशाखा	**वध**	रेवती	आश्लेषा	ज्येष्ठा
पुष्य	उ०भाद्रपद	अनुराधा	**मित्र**	अश्विनी	मघा	मूल
आश्लेषा	रेवती	ज्येष्ठा	**अतिमित्र**	भरणी	पू०फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

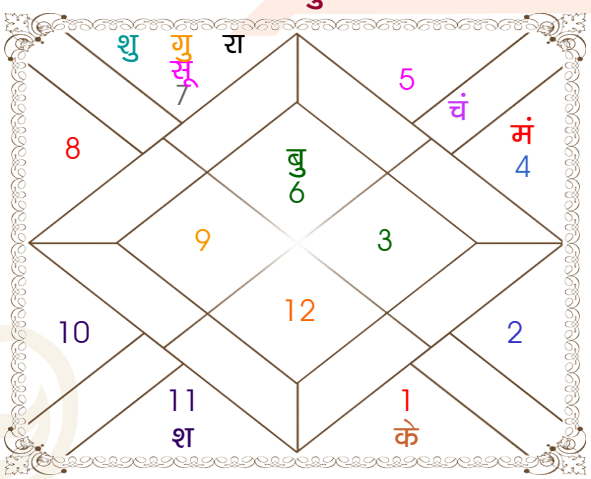

चलित कुंडली

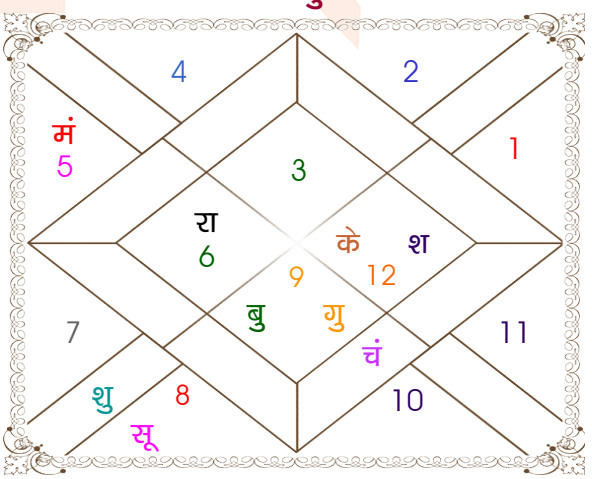

चन्द्र कुंडली

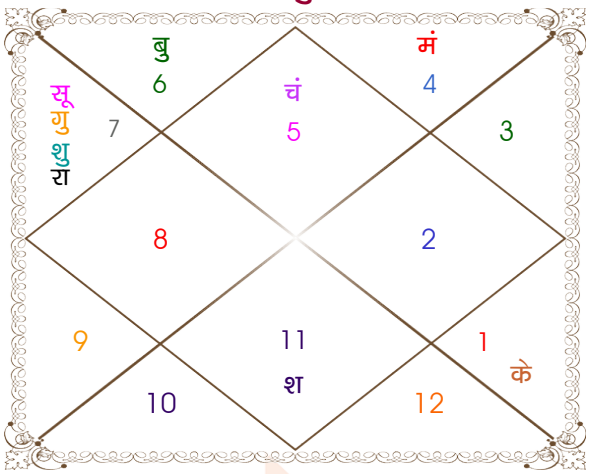

चन्द्र कुंडली

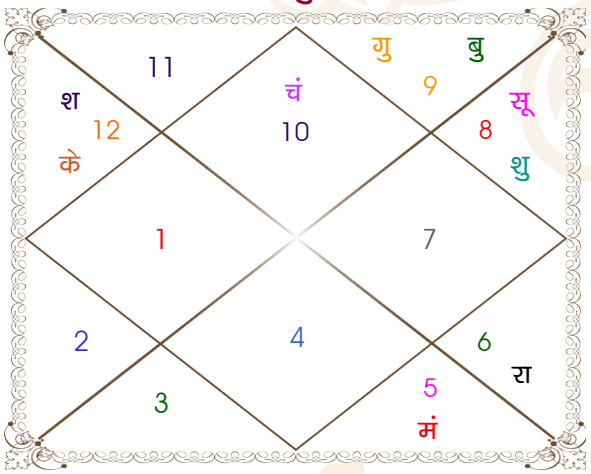

सूर्य कुंडली

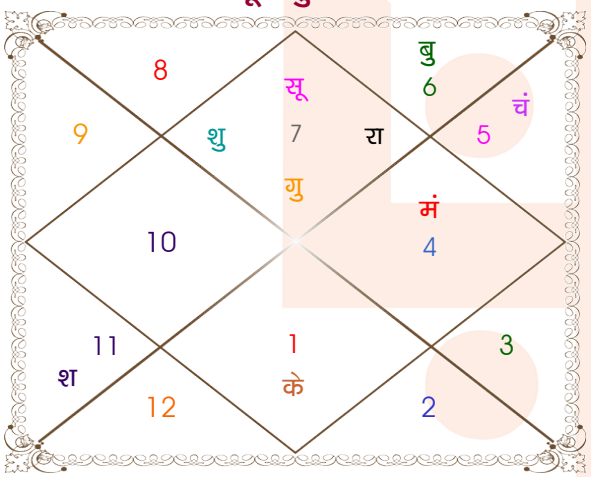

सूर्य कुंडली

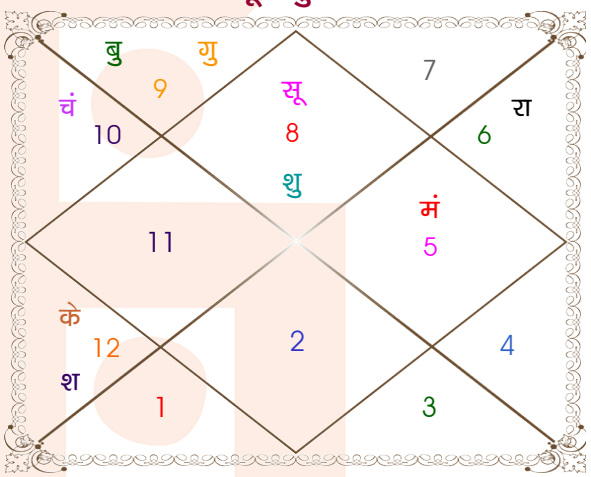

नवमांश कुंडली

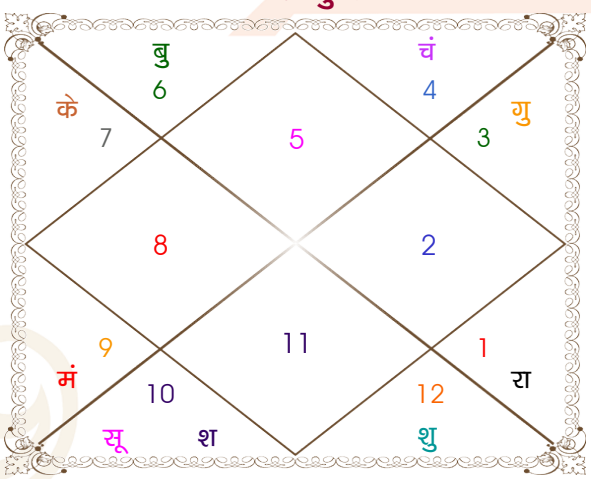

नवमांश कुंडली

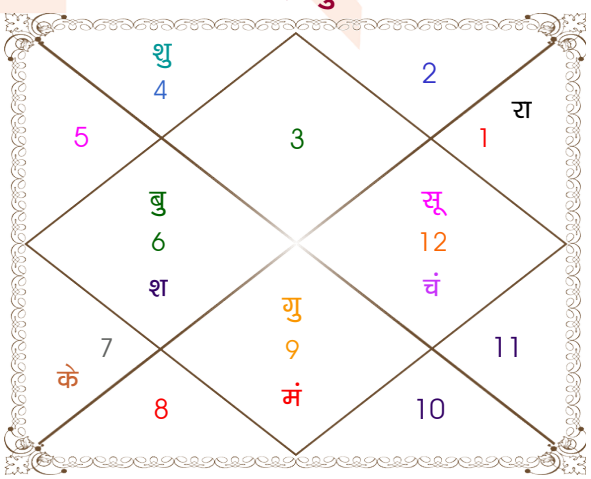

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

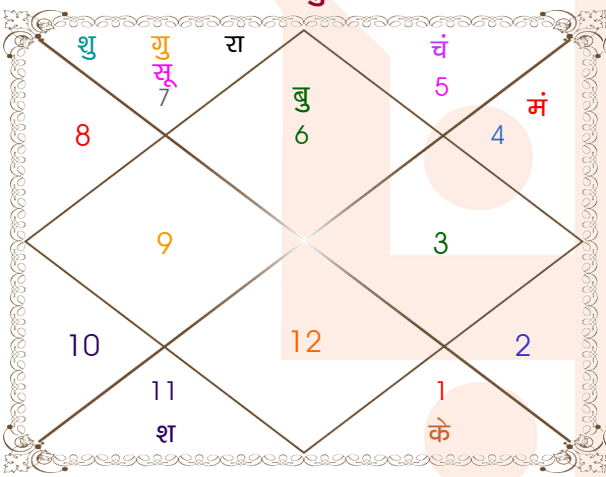

देह विचारः

लग्न कुंडली

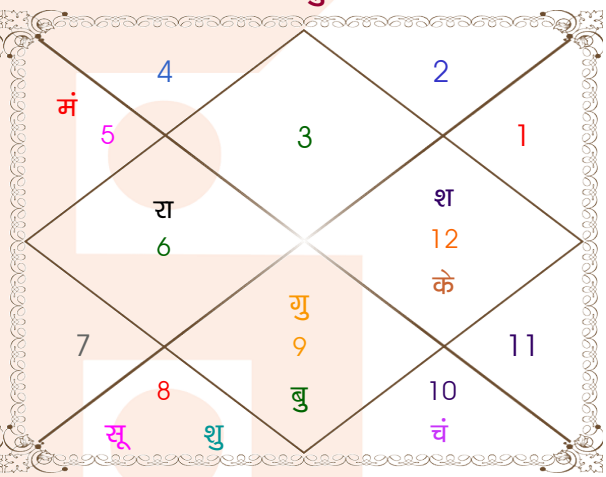

देह विचारः

होरा कुंडली

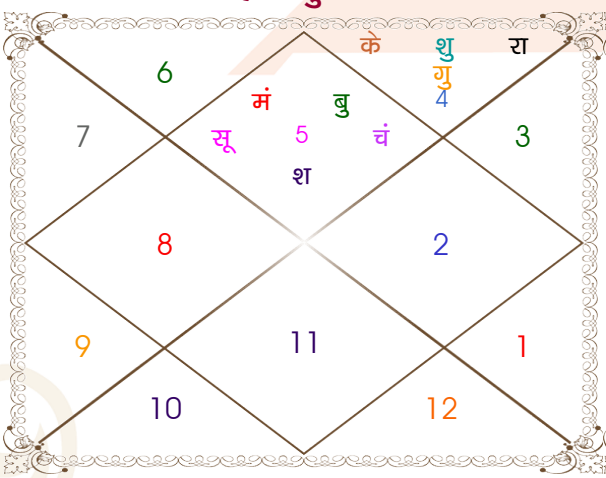

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

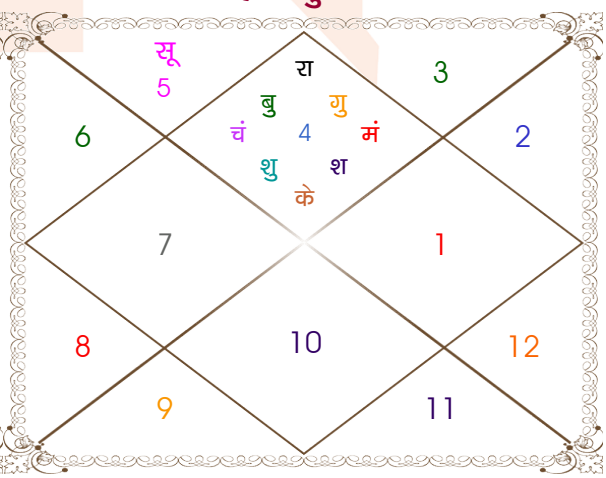

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

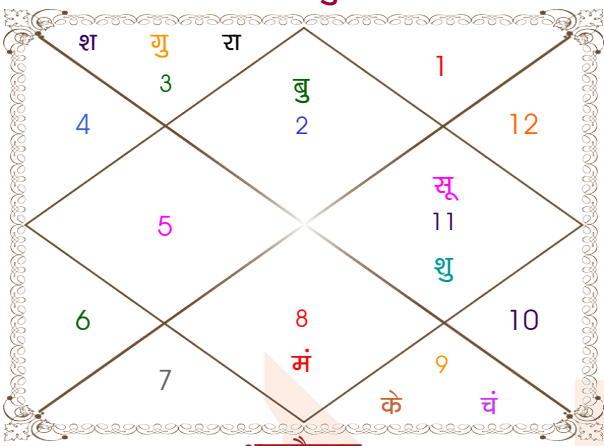

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

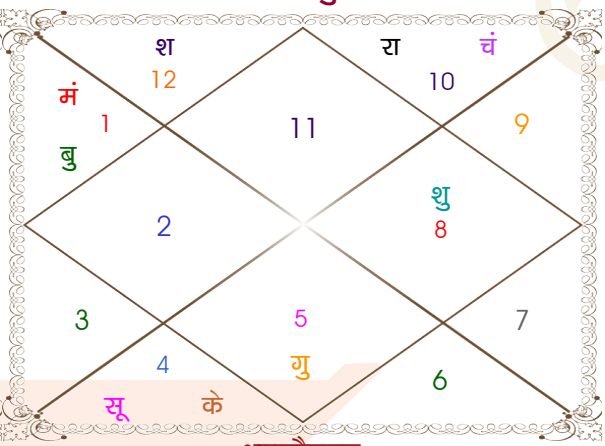

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

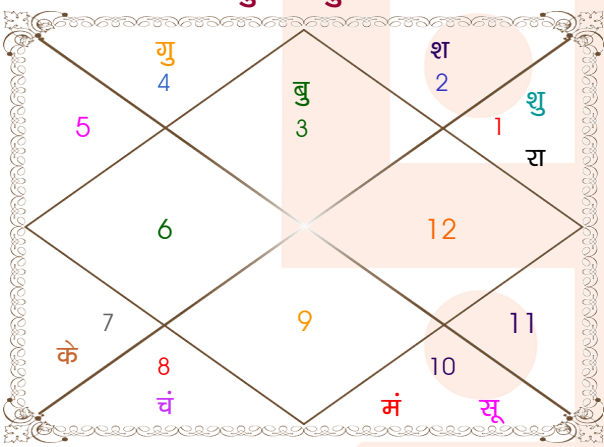

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

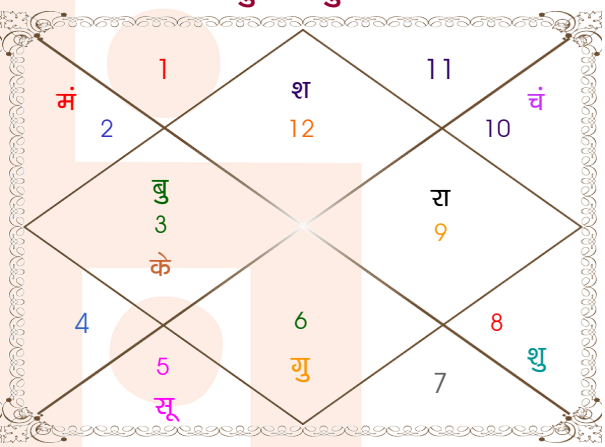

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

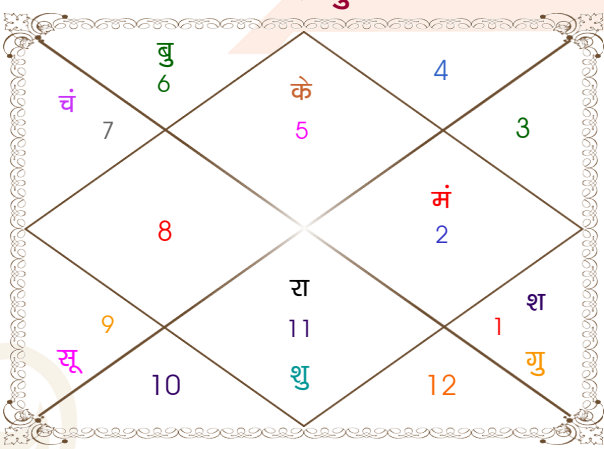

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

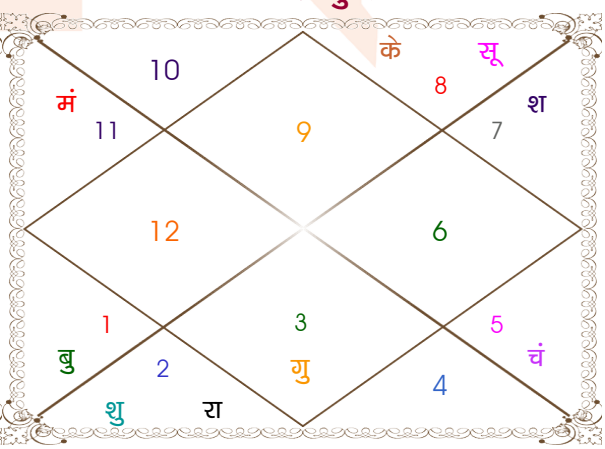

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

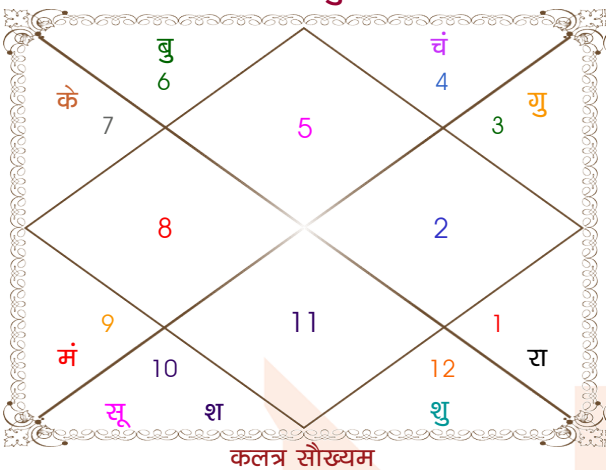

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

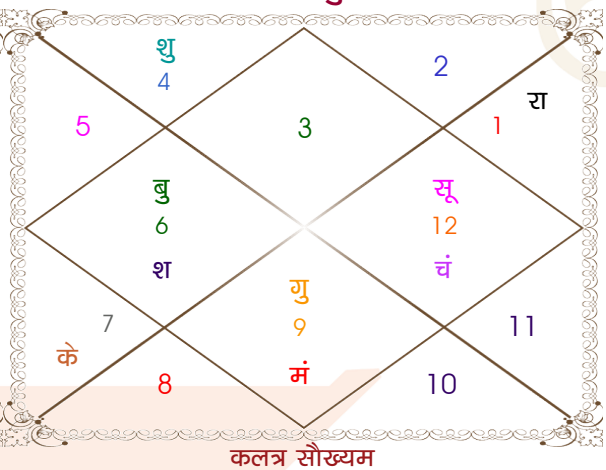

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

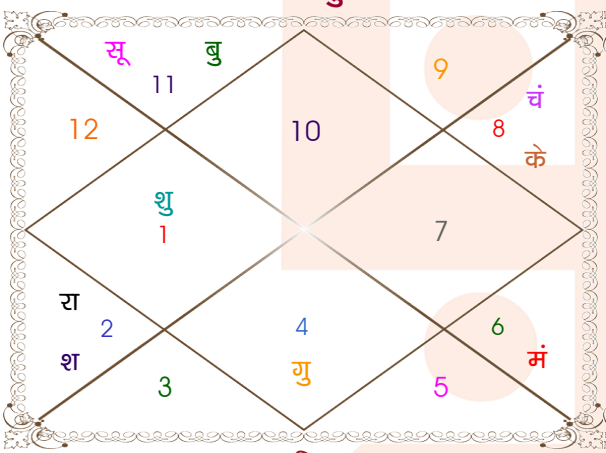

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

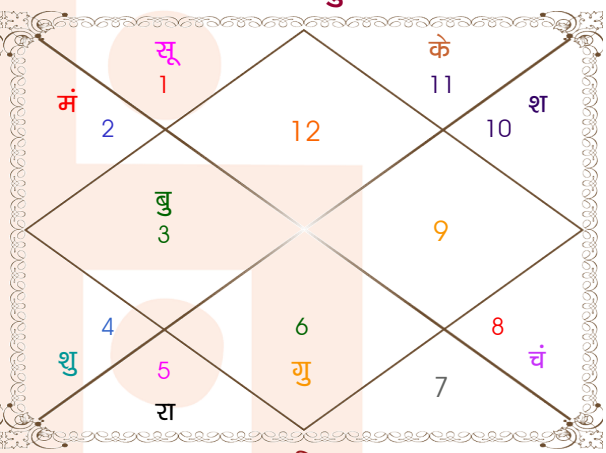

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

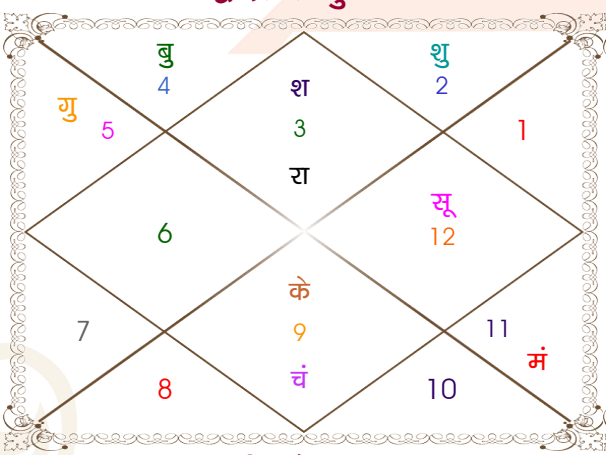

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

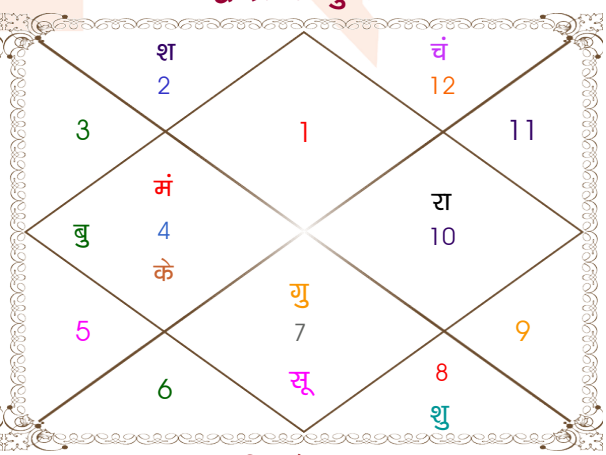

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

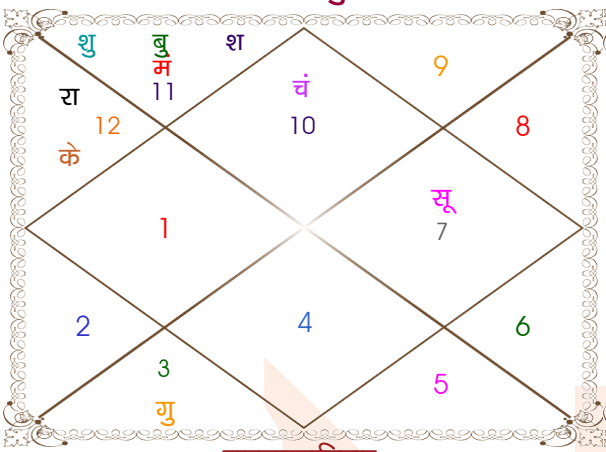

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

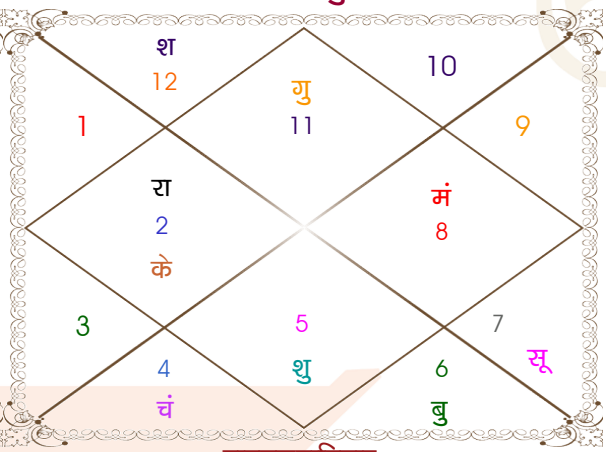

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

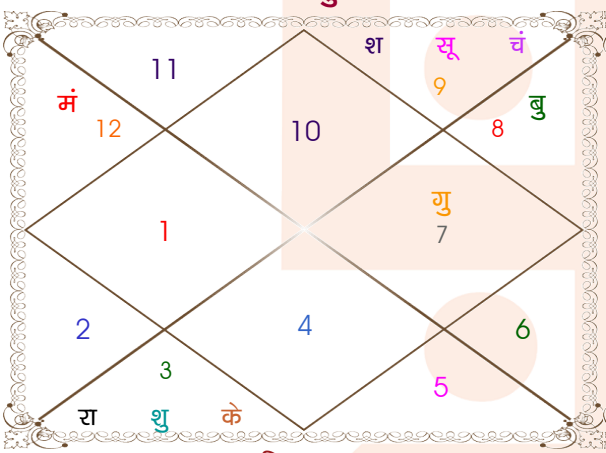

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

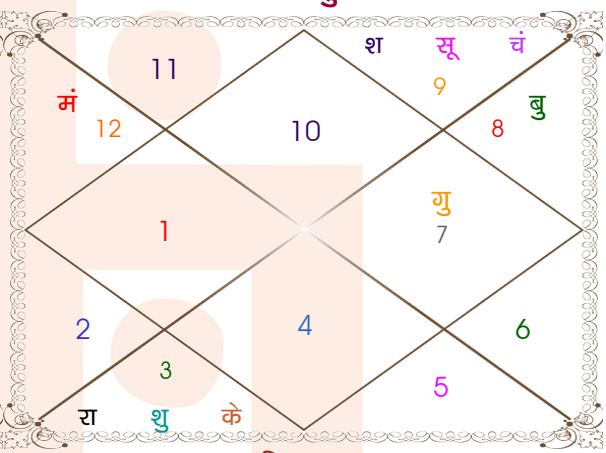

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

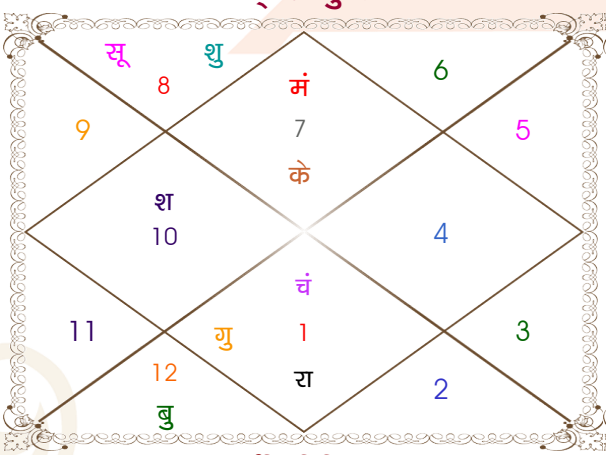

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

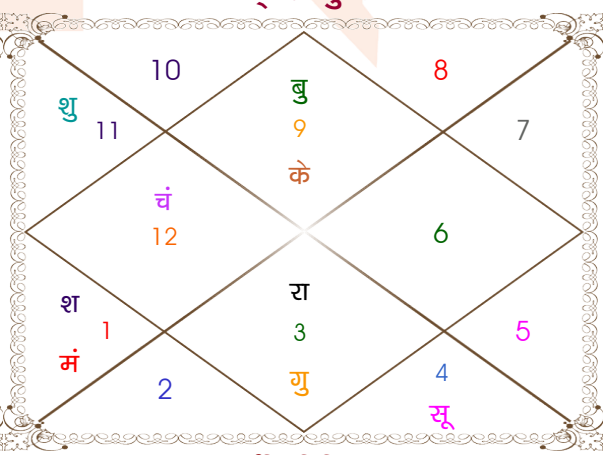

सर्वास्थितिविचारः

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 1 वर्ष 5 मास 24 दिन

के.पी. अयनांश : 23:40:52

फॉरच्युना : कर्क 22:47:03

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	12:38:34	शुक्र	राहु	बुध	बुध
चंद्र		सिंह	10:30:25	सूर्य	केतु	शनि	सूर्य
मंगल		कर्क	19:45:00	चंद्र	बुध	शुक्र	सूर्य
बुध	व	कन्या	27:08:14	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र
गुरु		तुला	27:24:39	शुक्र	गुरु	शुक्र	राहु
शुक्र	व	तुला	18:59:35	शुक्र	राहु	चंद्र	शुक्र
शनि	व	कुंभ	12:05:32	शनि	राहु	शनि	राहु
राहु	व	तुला	21:09:35	शुक्र	गुरु	गुरु	शुक्र
केतु	व	मेष	21:09:35	मंगल	शुक्र	गुरु	शुक्र
हर्षल		धनु	29:02:17	गुरु	सूर्य	मंगल	शुक्र
नेप		धनु	27:06:00	गुरु	सूर्य	सूर्य	बुध
प्लूटो		वृश्चि	03:26:37	मंगल	शनि	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	24:55:12	बुध	मंगल	राहु	शनि
2	तुला	23:22:54	शुक्र	गुरु	शनि	राहु
3	वृश्चि	24:04:05	मंगल	बुध	मंगल	चंद्र
4	धनु	26:10:02	गुरु	शुक्र	केतु	चंद्र
5	मक	28:16:50	शनि	मंगल	शनि	बुध
6	कुंभ	28:23:05	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
7	मीन	24:55:12	गुरु	बुध	राहु	शनि
8	मेष	23:22:54	मंगल	शुक्र	शनि	मंगल
9	वृष	24:04:05	शुक्र	मंगल	मंगल	चंद्र
10	मिथु	26:10:02	बुध	गुरु	केतु	राहु
11	कर्क	28:16:50	चंद्र	बुध	शनि	बुध
12	सिंह	28:23:05	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शुक्र

भाव कुंडली

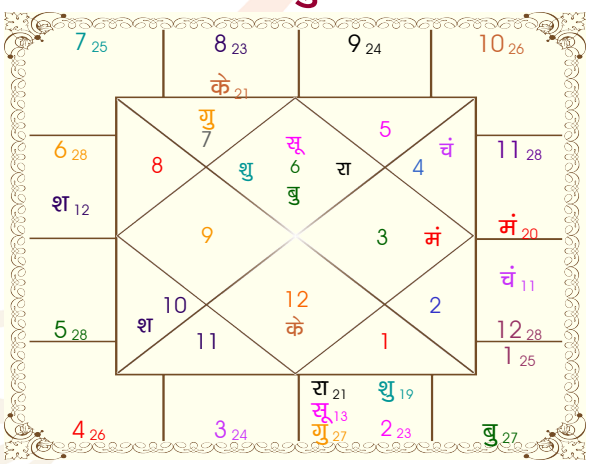

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 2 मास 5 दिन

के.पी. अयनांश : 23:42:38

फॉरच्युना : सिंह 06:39:32

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	28:08:33	मंगल	बुध	शनि	शनि
चंद्र		मक	07:22:29	शनि	सूर्य	केतु	राहु
मंगल		सिंह	28:27:17	सूर्य	सूर्य	मंगल	मंगल
बुध		धनु	18:19:42	गुरु	शुक्र	राहु	राहु
गुरु		धनु	27:18:07	गुरु	सूर्य	सूर्य	शुक्र
शुक्र		वृश्चि	01:44:31	मंगल	गुरु	राहु	गुरु
शनि		मीन	06:59:26	गुरु	शनि	बुध	गुरु
राहु	व	कन्या	10:47:32	बुध	चंद्र	चंद्र	बुध
केतु	व	मीन	10:47:32	गुरु	शनि	सूर्य	बुध
हर्षल		मक	08:36:11	शनि	सूर्य	शुक्र	राहु
नेप		मक	02:28:30	शनि	सूर्य	गुरु	सूर्य
प्लूटो		वृश्चि	10:00:41	मंगल	शनि	शुक्र	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	27:25:36	बुध	गुरु	शुक्र	राहु
2	कर्क	19:57:06	चंद्र	बुध	शुक्र	चंद्र
3	सिंह	15:42:47	सूर्य	शुक्र	सूर्य	राहु
4	कन्या	16:32:49	बुध	चंद्र	शनि	शुक्र
5	तुला	21:27:40	शुक्र	गुरु	गुरु	मंगल
6	वृश्चि	26:09:02	मंगल	बुध	गुरु	गुरु
7	धनु	27:25:36	गुरु	सूर्य	चंद्र	मंगल
8	मक	19:57:06	शनि	चंद्र	केतु	मंगल
9	कुंभ	15:42:47	शनि	राहु	शुक्र	चंद्र
10	मीन	16:32:49	गुरु	शनि	गुरु	राहु
11	मेष	21:27:40	मंगल	शुक्र	गुरु	चंद्र
12	वृष	26:09:02	शुक्र	मंगल	गुरु	गुरु

भाव कुंडली

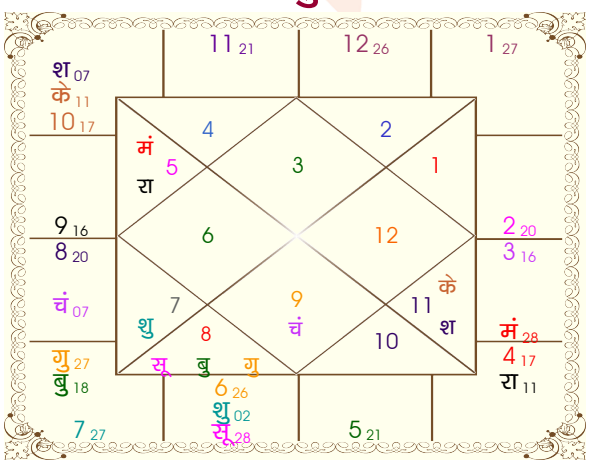

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य+ मंगल+ बुध, शुक्र+ शनि, राहु, केतु,
2	गुरु+ शुक्र- राहु, केतु-
3	मंगल- बुध-
4	गुरु, राहु-
5	शनि,
6	शनि-
7	चंद्र, गुरु, राहु- केतु,
8	मंगल- बुध-
9	शुक्र- केतु-
10	मंगल+ बुध+
11	चंद्र,
12	सूर्य-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- बुध-
2	चंद्र- राहु-
3	सूर्य- चंद्र- मंगल+ गुरु- राहु,
4	सूर्य- बुध-
5	बुध+ शुक्र,
6	सूर्य+ चंद्र, मंगल+ बुध, गुरु+ शुक्र,
7	चंद्र, गुरु- शुक्र- राहु,
8	शनि, केतु-
9	शनि+ केतु+
10	गुरु- शुक्र-
11	मंगल-
12	बुध- शुक्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1+ 12-
चंद्र	7, 11,
मंगल	1+ 3- 8- 10+
बुध	1, 3- 8- 10+
गुरु	2+ 4, 7,
शुक्र	1+ 2- 9-
शनि	1, 5, 6-
राहु	1, 2, 4- 7-
केतु	1, 2- 7, 9-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 3- 4- 6+
चंद्र	2- 3- 6, 7,
मंगल	3+ 6+ 11-
बुध	1- 4- 5+ 6, 12-
गुरु	3- 6+ 7- 10-
शुक्र	5, 6, 7- 10- 12-
शनि	8, 9+
राहु	2- 3, 7,
केतु	8- 9+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	केतु

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

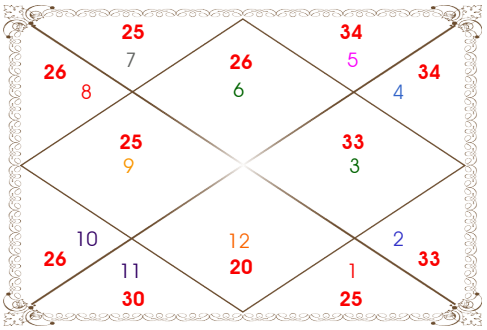

सर्वाष्टकवर्ग

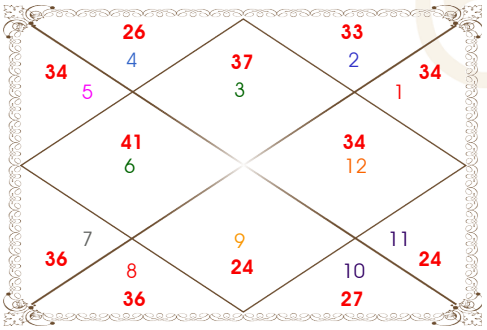

Mohit

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	5	4	4	4	2	3	3	2	3	2	39
गुरु	5	5	6	7	4	3	5	3	5	6	5	2	56
मंगल	1	3	2	5	5	4	3	3	2	3	5	3	39
सूर्य	3	5	5	4	6	2	4	4	2	4	5	4	48
शुक्र	3	7	5	5	4	5	5	5	5	3	3	2	52
बुध	2	6	5	3	6	6	4	4	3	4	6	5	54
चंद्र	7	4	5	6	5	2	2	4	5	4	3	2	49
बिन्दु	25	33	33	34	34	26	25	26	25	26	30	20	337
रेखा	31	23	23	22	22	30	31	30	31	30	26	36	335

Diksha

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	3	4	5	2	5	4	5	3	4	6	2	6	49
सूर्य	6	6	4	1	5	5	5	6	2	1	3	4	48
चंद्र	4	4	5	5	4	5	4	3	3	5	2	5	49
मंगल	4	3	5	0	3	5	4	5	1	2	2	5	39
बुध	6	3	5	4	3	6	5	7	3	3	4	5	54
गुरु	3	5	4	6	5	7	3	4	5	3	6	5	56
शुक्र	5	3	5	5	5	5	6	3	4	5	4	2	52
शनि	3	5	4	3	4	4	4	5	2	2	1	2	39
बिन्दु	34	33	37	26	34	41	36	36	24	27	24	34	386
रेखा	30	31	27	38	30	23	28	28	40	37	40	30	382

शोध्य पिंड - Mohit

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	101	76	102	121	72	108	57
ग्रह पिंड	25	37	78	40	40	83	36
शोध्य पिंड	126	113	180	161	112	191	93

शोध्य पिंड - Diksha

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	140	153	81	137	56	124	67	74
ग्रह पिंड	73	99	23	101	41	51	30	52
शोध्य पिंड	213	252	104	238	97	175	97	126

विंशोत्तरी दशा

केतु 1 वर्ष 6 मास 14 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
30/10/1994		14/05/1996		14/05/2016	
14/05/1996		14/05/2016		15/05/2022	
00/00/0000	शुक्र	14/09/1999	सूर्य	01/09/2016	
00/00/0000	सूर्य	13/09/2000	चंद्र	02/03/2017	
00/00/0000	चंद्र	15/05/2002	मंगल	08/07/2017	
00/00/0000	मंगल	15/07/2003	राहु	02/06/2018	
00/00/0000	राहु	15/07/2006	गुरु	21/03/2019	
00/00/0000	गुरु	15/03/2009	शनि	02/03/2020	
30/10/1994	शनि	14/05/2012	बुध	07/01/2021	
शनि 18/05/1995	बुध	15/03/2015	केतु	14/05/2021	
बुध 14/05/1996	केतु	14/05/2016	शुक्र	15/05/2022	

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
15/05/2022		14/05/2032		15/05/2039	
14/05/2032		15/05/2039		14/05/2057	
चंद्र 15/03/2023	मंगल	10/10/2032	राहु	25/01/2042	
मंगल 14/10/2023	राहु	29/10/2033	गुरु	20/06/2044	
राहु 14/04/2025	गुरु	05/10/2034	शनि	27/04/2047	
गुरु 14/08/2026	शनि	14/11/2035	बुध	13/11/2049	
शनि 14/03/2028	बुध	10/11/2036	केतु	02/12/2050	
बुध 14/08/2029	केतु	08/04/2037	शुक्र	01/12/2053	
केतु 15/03/2030	शुक्र	08/06/2038	सूर्य	26/10/2054	
शुक्र 14/11/2031	सूर्य	14/10/2038	चंद्र	26/04/2056	
सूर्य 14/05/2032	चंद्र	15/05/2039	मंगल	14/05/2057	

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/05/2057		14/05/2073		14/05/2092	
14/05/2073		14/05/2092		15/05/2109	
गुरु 03/07/2059	शनि	17/05/2076	बुध	11/10/2094	
शनि 13/01/2062	बुध	25/01/2079	केतु	08/10/2095	
बुध 20/04/2064	केतु	05/03/2080	शुक्र	08/08/2098	
केतु 27/03/2065	शुक्र	06/05/2083	सूर्य	14/06/2099	
शुक्र 26/11/2067	सूर्य	17/04/2084	चंद्र	14/11/2100	
सूर्य 13/09/2068	चंद्र	16/11/2085	मंगल	11/11/2101	
चंद्र 13/01/2070	मंगल	26/12/2086	राहु	30/05/2104	
मंगल 20/12/2070	राहु	01/11/2089	गुरु	05/09/2106	
राहु 14/05/2073	गुरु	14/05/2092	शनि	15/05/2109	

सूर्य 1 वर्ष 2 मास 22 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
13/12/1996		07/03/1998		06/03/2008	
07/03/1998		06/03/2008		07/03/2015	
00/00/0000	चंद्र	05/01/1999	मंगल	03/08/2008	
00/00/0000	मंगल	06/08/1999	राहु	21/08/2009	
00/00/0000	राहु	04/02/2001	गुरु	28/07/2010	
00/00/0000	गुरु	06/06/2002	शनि	06/09/2011	
00/00/0000	शनि	06/01/2004	बुध	02/09/2012	
00/00/0000	बुध	06/06/2005	केतु	29/01/2013	
13/12/1996	केतु	05/01/2006	शुक्र	31/03/2014	
केतु 07/03/1997	शुक्र	06/09/2007	सूर्य	06/08/2014	
शुक्र 07/03/1998	सूर्य	06/03/2008	चंद्र	07/03/2015	

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
07/03/2015		07/03/2033		07/03/2049	
07/03/2033		07/03/2049		06/03/2068	
राहु 17/11/2017	गुरु	25/04/2035	शनि	09/03/2052	
गुरु 12/04/2020	शनि	05/11/2037	बुध	18/11/2054	
शनि 17/02/2023	बुध	11/02/2040	केतु	27/12/2055	
बुध 05/09/2025	केतु	17/01/2041	शुक्र	26/02/2059	
केतु 24/09/2026	शुक्र	18/09/2043	सूर्य	08/02/2060	
शुक्र 24/09/2029	सूर्य	06/07/2044	चंद्र	08/09/2061	
सूर्य 18/08/2030	चंद्र	05/11/2045	मंगल	18/10/2062	
चंद्र 17/02/2032	मंगल	12/10/2046	राहु	24/08/2065	
मंगल 07/03/2033	राहु	07/03/2049	गुरु	06/03/2068	

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
06/03/2068		07/03/2085		06/03/2092	
07/03/2085		06/03/2092		07/03/2112	
बुध 03/08/2070	केतु	03/08/2085	शुक्र	07/07/2095	
केतु 31/07/2071	शुक्र	03/10/2086	सूर्य	06/07/2096	
शुक्र 31/05/2074	सूर्य	08/02/2087	चंद्र	07/03/2098	
सूर्य 07/04/2075	चंद्र	09/09/2087	मंगल	07/05/2099	
चंद्र 05/09/2076	मंगल	05/02/2088	राहु	08/05/2102	
मंगल 02/09/2077	राहु	22/02/2089	गुरु	06/01/2105	
राहु 22/03/2080	गुरु	29/01/2090	शनि	07/03/2108	
गुरु 28/06/2082	शनि	10/03/2091	बुध	06/01/2111	
शनि 07/03/2085	बुध	06/03/2092	केतु	07/03/2112	

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
14/04/2025		14/08/2026		14/03/2028	
14/08/2026		14/03/2028		14/08/2029	
गुरु	18/06/2025	शनि	14/11/2026	बुध	27/05/2028
शनि	03/09/2025	बुध	03/02/2027	केतु	26/06/2028
बुध	11/11/2025	केतु	09/03/2027	शुक्र	20/09/2028
केतु	09/12/2025	शुक्र	14/06/2027	सूर्य	16/10/2028
शुक्र	01/03/2026	सूर्य	13/07/2027	चंद्र	28/11/2028
सूर्य	25/03/2026	चंद्र	30/08/2027	मंगल	28/12/2028
चंद्र	05/05/2026	मंगल	02/10/2027	राहु	16/03/2029
मंगल	02/06/2026	राहु	28/12/2027	गुरु	24/05/2029
राहु	14/08/2026	गुरु	14/03/2028	शनि	14/08/2029

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
05/09/2025		24/09/2026		24/09/2029	
24/09/2026		24/09/2029		18/08/2030	
केतु	28/09/2025	शुक्र	25/03/2027	सूर्य	10/10/2029
शुक्र	01/12/2025	सूर्य	19/05/2027	चंद्र	06/11/2029
सूर्य	20/12/2025	चंद्र	19/08/2027	मंगल	26/11/2029
चंद्र	21/01/2026	मंगल	21/10/2027	राहु	14/01/2030
मंगल	12/02/2026	राहु	03/04/2028	गुरु	27/02/2030
राहु	11/04/2026	गुरु	27/08/2028	शनि	20/04/2030
गुरु	01/06/2026	शनि	16/02/2029	बुध	05/06/2030
शनि	31/07/2026	बुध	22/07/2029	केतु	24/06/2030
बुध	24/09/2026	केतु	24/09/2029	शुक्र	18/08/2030

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
14/08/2029		15/03/2030		14/11/2031	
15/03/2030		14/11/2031		14/05/2032	
केतु	26/08/2029	शुक्र	24/06/2030	सूर्य	23/11/2031
शुक्र	01/10/2029	सूर्य	25/07/2030	चंद्र	08/12/2031
सूर्य	11/10/2029	चंद्र	13/09/2030	मंगल	19/12/2031
चंद्र	29/10/2029	मंगल	19/10/2030	राहु	15/01/2032
मंगल	11/11/2029	राहु	18/01/2031	गुरु	08/02/2032
राहु	12/12/2029	गुरु	09/04/2031	शनि	08/03/2032
गुरु	10/01/2030	शनि	15/07/2031	बुध	03/04/2032
शनि	13/02/2030	बुध	09/10/2031	केतु	14/04/2032
बुध	15/03/2030	केतु	14/11/2031	शुक्र	14/05/2032

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
18/08/2030		17/02/2032		07/03/2033	
17/02/2032		07/03/2033		25/04/2035	
चंद्र	03/10/2030	मंगल	11/03/2032	गुरु	19/06/2033
मंगल	04/11/2030	राहु	07/05/2032	शनि	20/10/2033
राहु	25/01/2031	गुरु	27/06/2032	बुध	07/02/2034
गुरु	08/04/2031	शनि	27/08/2032	केतु	25/03/2034
शनि	04/07/2031	बुध	20/10/2032	शुक्र	02/08/2034
बुध	19/09/2031	केतु	12/11/2032	सूर्य	10/09/2034
केतु	21/10/2031	शुक्र	15/01/2033	चंद्र	14/11/2034
शुक्र	21/01/2032	सूर्य	03/02/2033	मंगल	29/12/2034
सूर्य	17/02/2032	चंद्र	07/03/2033	राहु	25/04/2035

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
14/05/2032		10/10/2032		29/10/2033	
10/10/2032		29/10/2033		05/10/2034	
मंगल	23/05/2032	राहु	07/12/2032	गुरु	13/12/2033
राहु	14/06/2032	गुरु	27/01/2033	शनि	05/02/2034
गुरु	04/07/2032	शनि	29/03/2033	बुध	26/03/2034
शनि	28/07/2032	बुध	22/05/2033	केतु	14/04/2034
बुध	18/08/2032	केतु	13/06/2033	शुक्र	10/06/2034
केतु	27/08/2032	शुक्र	16/08/2033	सूर्य	27/06/2034
शुक्र	20/09/2032	सूर्य	05/09/2033	चंद्र	26/07/2034
सूर्य	28/09/2032	चंद्र	06/10/2033	मंगल	15/08/2034
चंद्र	10/10/2032	मंगल	29/10/2033	राहु	05/10/2034

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
25/04/2035		05/11/2037		11/02/2040	
05/11/2037		11/02/2040		17/01/2041	
शनि	18/09/2035	बुध	02/03/2038	केतु	02/03/2040
बुध	27/01/2036	केतु	20/04/2038	शुक्र	28/04/2040
केतु	21/03/2036	शुक्र	05/09/2038	सूर्य	15/05/2040
शुक्र	23/08/2036	सूर्य	16/10/2038	चंद्र	12/06/2040
सूर्य	08/10/2036	चंद्र	24/12/2038	मंगल	02/07/2040
चंद्र	24/12/2036	मंगल	10/02/2039	राहु	22/08/2040
मंगल	16/02/2037	राहु	15/06/2039	गुरु	07/10/2040
राहु	05/07/2037	गुरु	03/10/2039	शनि	30/11/2040
गुरु	05/11/2037	शनि	11/02/2040	बुध	17/01/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
05/10/2034		14/11/2035		10/11/2036	
14/11/2035		10/11/2036		08/04/2037	
शनि	08/12/2034	बुध	04/01/2036	केतु	18/11/2036
बुध	03/02/2035	केतु	25/01/2036	शुक्र	13/12/2036
केतु	27/02/2035	शुक्र	25/03/2036	सूर्य	21/12/2036
शुक्र	05/05/2035	सूर्य	12/04/2036	चंद्र	02/01/2037
सूर्य	26/05/2035	चंद्र	13/05/2036	मंगल	11/01/2037
चंद्र	28/06/2035	मंगल	03/06/2036	राहु	02/02/2037
मंगल	22/07/2035	राहु	27/07/2036	गुरु	22/02/2037
राहु	21/09/2035	गुरु	13/09/2036	शनि	18/03/2037
गुरु	14/11/2035	शनि	10/11/2036	बुध	08/04/2037

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
17/01/2041		18/09/2043		06/07/2044	
18/09/2043		06/07/2044		05/11/2045	
शुक्र	28/06/2041	सूर्य	03/10/2043	चंद्र	16/08/2044
सूर्य	16/08/2041	चंद्र	27/10/2043	मंगल	13/09/2044
चंद्र	05/11/2041	मंगल	13/11/2043	राहु	25/11/2044
मंगल	01/01/2042	राहु	27/12/2043	गुरु	29/01/2045
राहु	27/05/2042	गुरु	04/02/2044	शनि	16/04/2045
गुरु	04/10/2042	शनि	21/03/2044	बुध	24/06/2045
शनि	07/03/2043	बुध	01/05/2044	केतु	23/07/2045
बुध	23/07/2043	केतु	18/05/2044	शुक्र	12/10/2045
केतु	18/09/2043	शुक्र	06/07/2044	सूर्य	05/11/2045

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
08/04/2037		08/06/2038		14/10/2038	
08/06/2038		14/10/2038		15/05/2039	
शुक्र	18/06/2037	सूर्य	14/06/2038	चंद्र	01/11/2038
सूर्य	09/07/2037	चंद्र	25/06/2038	मंगल	13/11/2038
चंद्र	14/08/2037	मंगल	03/07/2038	राहु	15/12/2038
मंगल	08/09/2037	राहु	22/07/2038	गुरु	12/01/2039
राहु	11/11/2037	गुरु	08/08/2038	शनि	15/02/2039
गुरु	06/01/2038	शनि	28/08/2038	बुध	17/03/2039
शनि	15/03/2038	बुध	15/09/2038	केतु	30/03/2039
बुध	14/05/2038	केतु	23/09/2038	शुक्र	04/05/2039
केतु	08/06/2038	शुक्र	14/10/2038	सूर्य	15/05/2039

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
05/11/2045		12/10/2046		07/03/2049	
12/10/2046		07/03/2049		09/03/2052	
मंगल	25/11/2045	राहु	21/02/2047	शनि	28/08/2049
राहु	15/01/2046	गुरु	17/06/2047	बुध	30/01/2050
गुरु	02/03/2046	शनि	03/11/2047	केतु	04/04/2050
शनि	25/04/2046	बुध	06/03/2048	शुक्र	05/10/2050
बुध	12/06/2046	केतु	27/04/2048	सूर्य	28/11/2050
केतु	02/07/2046	शुक्र	20/09/2048	चंद्र	28/02/2051
शुक्र	28/08/2046	सूर्य	02/11/2048	मंगल	03/05/2051
सूर्य	14/09/2046	चंद्र	15/01/2049	राहु	15/10/2051
चंद्र	12/10/2046	मंगल	07/03/2049	गुरु	09/03/2052

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
15/05/2039		25/01/2042		20/06/2044	
25/01/2042		20/06/2044		27/04/2047	
राहु	10/10/2039	गुरु	22/05/2042	शनि	02/12/2044
गुरु	18/02/2040	शनि	08/10/2042	बुध	28/04/2045
शनि	23/07/2040	बुध	09/02/2043	केतु	28/06/2045
बुध	10/12/2040	केतु	01/04/2043	शुक्र	18/12/2045
केतु	06/02/2041	शुक्र	25/08/2043	सूर्य	08/02/2046
शुक्र	20/07/2041	सूर्य	08/10/2043	चंद्र	06/05/2046
सूर्य	07/09/2041	चंद्र	20/12/2043	मंगल	06/07/2046
चंद्र	29/11/2041	मंगल	09/02/2044	राहु	09/12/2046
मंगल	25/01/2042	राहु	20/06/2044	गुरु	27/04/2047

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
09/03/2052		18/11/2054		27/12/2055	
18/11/2054		27/12/2055		26/02/2059	
बुध	27/07/2052	केतु	11/12/2054	शुक्र	07/07/2056
केतु	22/09/2052	शुक्र	17/02/2055	सूर्य	03/09/2056
शुक्र	05/03/2053	सूर्य	09/03/2055	चंद्र	08/12/2056
सूर्य	23/04/2053	चंद्र	12/04/2055	मंगल	14/02/2057
चंद्र	14/07/2053	मंगल	05/05/2055	राहु	06/08/2057
मंगल	09/09/2053	राहु	05/07/2055	गुरु	08/01/2058
राहु	04/02/2054	गुरु	28/08/2055	शनि	10/07/2058
गुरु	15/06/2054	शनि	31/10/2055	बुध	21/12/2058
शनि	18/11/2054	बुध	27/12/2055	केतु	26/02/2059

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

3	मूलांक	4
9	भाग्यांक	5
3, 5, 7, 9	मित्र अंक	1, 4, 6, 5
1, 4, 8	शत्रु अंक	3, 7, 8
21,30,39,48,57	शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
बुध, शुक्र	शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
वृश्चिक, मेष	मित्र राशि	कन्या, तुला
धनु, वृष, कर्क	मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
सूर्य	अनुकूल देवता	नृसिंह
पन्ना	शुभ रत्न	पन्ना
संगपन्ना, मरगज	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
हीरा	भाग्य रत्न	नीलम
कांसा	शुभ धातु	कांसा
हरित	शुभ रंग	हरित
उत्तर	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
हाथी दाँत, कपूर, फल	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
मूँग	दान अन्न	मूँग
घी	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Mohit

जीवन रत्नः	पन्ना	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
भाग्य रत्नः	हीरा	धन, भाग्योदय
कारक रत्नः	नीलम	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख

Diksha

जीवन रत्नः	पन्ना	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	नीलम	व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती प्रथम ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती तृतीय ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती प्रथम ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
साढेसाती तृतीय ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	अल्प बचत
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Mohit

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।

6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Diksha

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	चतुष्पाद	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	नकुल	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शनि	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	सिंह	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	3.50		

कुल : **3.5 / 36**

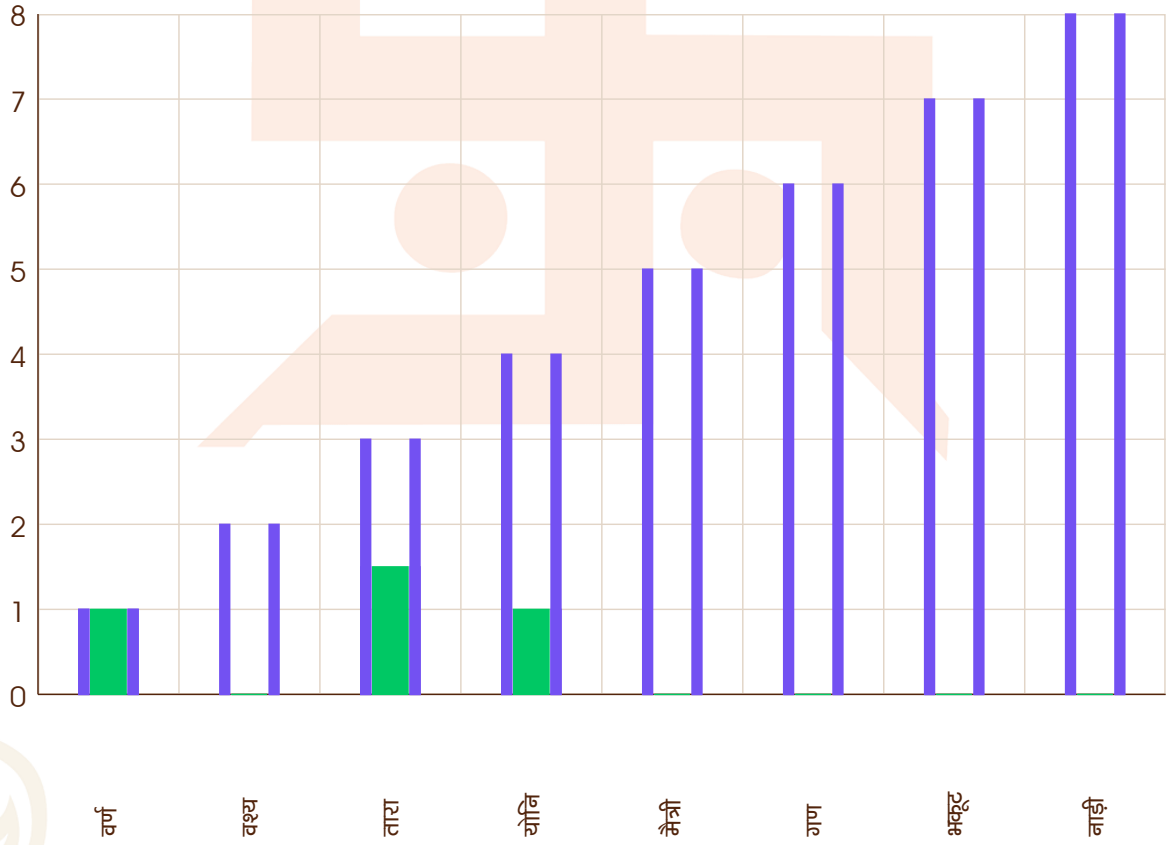

अष्टकूट मिलान

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

Mohit का वर्ग मूषक है तथा Diksha का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mohit और Diksha का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Mohit मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

Diksha मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Mohit तथा Diksha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mohit का वर्ण क्षत्रिय तथा Diksha का वर्ण वैश्य है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश Diksha आज्ञाकारी, सेवा करने वाली तथा विश्वासपात्र होगी। साथ ही Diksha की हमेशा कम खर्च करके परिवार के लिए पैसे बचाने की आदत रहेगी ताकि जिससे ये पैसे भविष्य में काम आ सकें।

वश्य

Mohit का वश्य वनचर है एवं Diksha का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर हमेशा चतुष्पद के लिए खतरा होता है। जब भी वनचर को मौका मिलता है वह चतुष्पद को अपना शिकार बना लेता है। वनचर Mohit एवं चतुष्पद Diksha का विवाह अच्छा साबित होने में संदेह है। Mohit निर्दयी, क्रूर, वर्चस्वशाली एवं चतुर होगा तथा अपनी पत्नी को नौकरानी की भांति समझेगा। वह Diksha को नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं चूकेगा। अक्सर वह अपनी पत्नी के साथ क्रूर व्यवहार कर सकता है तथा संभव है Diksha को अक्सर उसका दुर्व्यवहार सहना पड़े।

तारा

Mohit की तारा मित्र तथा Diksha की तारा विपत है। Diksha की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान Mohit एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि Diksha का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

Mohit की योनि मूषक है तथा Diksha की योनि नकुल है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि

होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mohit एवं Diksha दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण Mohit एवं Diksha के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी Mohit दवं Diksha को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

Mohit का गण राक्षस है तथा Diksha का गण मनुष्य है। अर्थात Diksha का गण Mohit के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

Mohit से Diksha की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा Diksha से Mohit की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। जिसके कारण Mohit लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बनी रहेगी। Diksha को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं तथा परिवार के सदस्यों से वैमनस्य होने की संभावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद रह सकते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए समस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने से अलगाव एवं तलाक की संभावना भी रहेगी।

नाड़ी

Mohit की नाड़ी अन्त्य है तथा Diksha की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Mohit एवं Diksha की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश

संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Mohit की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त सिंह तथा Diksha की राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर है। नैसर्गिक रूप से आग्नि एवं पृथ्वी तत्व में असमानता तथा शत्रुता का भाव होने के कारण Mohit और Diksha के मध्य स्वाभाविक असमानता रहेगी जिससे परस्पर संबधों में मधुरता का अभाव रहेगा। अतः यह मिलान विशेष अनुकूल नहीं रहेगा।

Mohit की राशि का स्वामी सूर्य तथा Diksha की राशि का स्वामी शनि परस्पर शत्रुराशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से Mohit और Diksha के मध्य अनावश्यक विवाद, वैमनस्य तथा विरोध का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे। अतः संबधों में कटुता तथा तनाव का भाव रहेगा तथा पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी। साथ ही Mohit के उग्र भाव से भी कभी कभी अप्रियस्थिति उत्पन्न हो सकती है।

Mohit और Diksha की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती हैं। यह एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है। जिसका वैवाहिक जीवन पर स्पष्ट दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से ये एक दूसरे की आलोचना तथा विरोध करने में अपना अधिकांश समय करेंगे तथा समय समय पर कलह के कारण अलगाव तक की स्थिति बन सकती है या Mohit और Diksha में से किसी एक को स्वास्थ्य संबधी परेशानी हो सकती है ।

Mohit का वश्य वनचर तथा Diksha का वश्य जलचर है। वनचर एवं जलचर में स्वाभाविक समानता के कारण Mohit और Diksha की अभिरूचियां समान रहेंगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर समता रहेगी। साथ ही काम संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

Mohit का वर्ण क्षत्रिय तथा Diksha का वर्ण वैश्य है। अतः Mohit की प्रवृति साहसी एवं पराक्रमी कार्यो को करने में रहेगी तथा Diksha धनार्जन में दक्ष रहेंगी तथा व्यापारिक बुद्धि से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

धन

Mohit और Diksha दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा

आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Mohit तथा Diksha दोनों की ही अन्त्य नाड़ी है। अतः दोनों नाड़ी दोष से पीड़ित रहेंगे इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर शारीरिक अस्वस्थता के कारण सांसारिक महत्व के कार्यो को करने में परेशानी की अनुभूति होगी। इससे Diksha को गले से संबधित कोई परेशानी हो सकती है तथा कफ या वात संबंधी कष्ट का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन मंगल का इन पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा। अतः रोग की गंभीरता से बचाव रहेगा लेकिन समय समय पर न्यूनाधिक कष्ट की इन्हें अनुभूति होती रहेगी। इसके अतिरिक्त Diksha को यदा कदा यौन संबंी गुप्त रोगों का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से यह मिलान अच्छा नहीं रहेगा जिससे इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mohit और Diksha का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mohit और Diksha के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Diksha के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Diksha को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Diksha को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mohit और Diksha सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mohit और Diksha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Diksha के अपने सास से सामान्य संबध रहेंगे तथा परस्पर सामंजस्य से मधुरता बनी रहेगी यद्यपि इनके मध्य यदा कदा विवाद या मतभेद उत्पन्न होंगे परन्तु उनका बुद्धिमता से समाधान करने में दोनों को सफलता प्राप्त होगी। साथ ही Diksha यत्नपूर्वक सास की सुख सुविधाओं का ध्यान रखकर उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी।

लेकिन ससुर से पूर्ण स्नेह एवं सहानुभूति अर्जित करने में Diksha को कठिनाई का

सामना करना पड़ेगा तथा उनकी तरफ से समय समय पर समस्याएं उत्पन्न होगी। परन्तु ननद एवं देवरों से संबधों में मधुरता रहेगी तथा उनका व्यवहार मित्रवत रहेगा फलतः उनसे पूर्ण स्नेह एवं सहानुभूति प्राप्त होगी।

इस प्रकार Diksha को ससुराल में सामान्य रूप से अनुकूल वातावरण मिलेगा तथा किंचित असुविधाओं का सामना करके वह सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सकेंगी।

ससुराल-श्री

Mohit के अपनी सास से संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण इनमें विचार वैभिन्यता रहेगी लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का व्यवहार करें तो उपरोक्त मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा संबधों में वृद्धि के भी अवसर बनेंगे।

साथ ही ससुर से भी परस्पर संबधों में विवाद तथा तनाव युक्त वातावरण रहेगा जिससे न ही Mohit उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे तथा वे भी इन्हें विशेष अपनत्व तथा स्नेह का भाव अल्प ही प्रदान करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों से संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति का भाव रहेगा। इनके संबधों में मित्रता का भाव भी रहेगा जिससे परस्पर मुक्त भाव से वार्तालाप होता रहेगा। इस प्रकार ससुराल वालों का दृष्टिकोण Mohit के प्रति अनुकूल रहेगा तथा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

अंक ज्योतिष फल

Mohit

आपका जन्म दिनांक 30 है। तीन एवं शून्य का योग तीन आपका मूलांक होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह को माना गया है। शून्य शिव है, अखण्ड़ ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

मूलांक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव वश आप एक अनुशासन प्रिय तथा कठोर व्यक्ति के रूप में चर्चित रहेंगे। आपकी स्वयं अनुशासन में रहने की इच्छा रहेगी और यही अपेक्षा दूसरों से करेंगे। मातहतों के साथ आपकी कार्यशैली कठोर रहेगी। इससे आपको अधीनस्थों के विरोध, आलोचनाओं का शिकार होना पड़ेगा। आपका रूझान ज्ञान की ओर होने से आप विद्याध्यन के क्षेत्र में सफल रहेंगे। बौद्धिक स्तर के कार्य आप भलीभाँति संपादित करेंगे। कार्यों में आपकी मौलिकता झलकेगी। आपकी मुखिया बनने की महत्वाकांक्षा कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत रहेगी और दूसरों पर शासन करने में निपुण रहेंगे। धर्मक्षेत्र, कार्यक्षेत्र, समाजसेवा इत्यादि के कार्यों में आपको ख्याति प्राप्त होगी।

तर्क, ज्ञान शक्ति आपमें होने से आप मानसिक रूप से संतुलित रहेंगे तथा इसकी छाया आपके कार्यों में दृष्टि गोचर होगी। आप सामाजिक भलाई के कार्यों में रुचि लेंगे एवं कभी-भी किसी का अहित नहीं करेंगे। शून्य प्रभाववश आप शान्त, कोमल हृदय के वाणी से मधुर, सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले धर्म-कर्म के क्षेत्र में अग्रण्य व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

Diksha

आपका जन्म दिनांक 13 है। एक एवं तीन का योग 4 होने से आपका मूलांक चार होता है। अंक एक का स्वामी सूर्य, तीन का स्वामी गुरु तथा मूलांक 4 का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मतानुसार हर्षल होता है। इन तीनों ग्रहों के गुण अवगुण आपके जीवन को प्रभावित करेंगे। सूर्य प्रभाव से आप अपने लक्ष्य को वेधने में सफल होंगी एवं जीवन में काफी ऊँचाईयाँ प्राप्त करेंगी। गुरु प्रभाववश आपके अन्दर बुद्धि चातुर्य अच्छा रहेगा। आप अपनी बुद्धि से समाज में ख्याति अर्जित करेंगी तथा नाम भी प्राप्त करेंगी ।

हर्षल या राहु के प्रभाव द्वारा आपमें अच्छा साहस रहेगा, लेकिन जब कभी आप दुःसाहस करेंगी या दिखायेंगी तब आपको लाभ के साथ हानि की भी उपलब्धि होगी। हर्षल ग्रह परिवर्तन का द्योतक है। अचानक सफलता, असफलता देता है। कभी-कभी यह ग्रह विस्फोटक स्थिति भी निर्मित करता है। अतः ऐसे कार्यों को जिनमें जोखिम या हानि की संभावना हो, उन्हें आपको सोच समझकर करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य- गुरु के योग से साहस एवं धैर्य आपमें अच्छा रहेगा एवं जीवन में कई अवसरों पर आप अपने साहस एवं धैर्य का परिचय देंगी। आपकी शीघ्रातिशीघ्र कार्य संपादन

करने की अभिलाषा रहेगी। कार्यों में रुकावट को आप बर्दास्त नहीं करेंगी और आपके सतत् प्रयत्न कार्य की सफलता में ही लगे रहेंगे।

Mohit

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

Diksha

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व-बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगी जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगी एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगी। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगी।

आपकी व्यावसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगी एवं आवश्यकतानुसार वक्त-वे-वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगी तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत-मस्तक होंगे।

Mohit

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में कन्या लग्नोदय काल सिंह नवमांश एवं वृषम द्रेष्काण में हुआ था। इस जन्म लग्नराशयादिक संयोजनों से ऐसा प्रतीत होता है कि आप स्वाभाविक रूप से आनन्दप्रद जीवन व्यतीत करने के लिए सदैव अग्रसर रहेंगे। मुख्यतः आपकी आयु 33 वर्ष से 38 वर्ष के मध्य आपका भाग्योदय होगा तथा आप सुख-संसाधन युक्त होकर जीवन की पराकाष्ठा पर पहुँच जाएंगे।

आप प्रसन्नता पूर्वक द्विगुणित, आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपनी पत्नी के साथ अति आन्नदातिरेक होकर सुखमय समय व्यतीत करेंगे। आप व्यवहार कुशल व्यक्ति है। आप साहसिक भावनाओं से युक्त होकर अपना व्यवसायिक वृति संचालित करेंगे। आपका स्पष्ट दृष्टिकोण है कि आप अपने लक्ष्य के अनुसार धनी और सम्पन्न होना चाहते हैं।

आप निःसन्देह साहस और पूर्ण शक्तियुक्त होकर विशुद्ध भावना से अपनी महत्वकांक्षा के अनुरुप कार्य सम्पादन करते हैं। परन्तु आप उच्च आय हेतु अपनी दुर्भावनाओं को त्यागकर कार्य करें, अन्यथा आप अधिक धन संग्रह नहीं कर सकेंगे। क्योंकि हर दृष्टिकोण से आप अपनी मनोवृति को अनुकूल करके ही अच्छा जीवन व्यतीत कर सकेंगे। आप अच्छी प्रकार के वस्त्रादि पहनना पसन्द करते हैं । आप अपने मित्रों के साथ सन्तुष्ट रहकर अपने समय को अच्छी प्रकार व्यतीत करना चाहते हैं। आपकी मनोवृति धार्मिक पंथ की ओर प्रवृत है। आप ज्योतिष एवं परा विज्ञान के प्रदर्शित करने की अभिरूचि रखते हैं। आप तीर्थ स्थानों का परिदर्शन करेंगे तथा सामाजिक एवं परोपकारी सेवा भावना के प्रति समर्पित रहेंगे जो असहाय प्राणी आपकी सेवा की अपेक्षा करेंगे। आप उन पर सहानुभूति पूर्वक सहायता करेंगे।

आप अपने व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य संबंधित कार्य व्यवसाय भी औरों की अपेक्षा अच्छी प्रकार सम्पादित करेंगे। परन्तु आपको अपने लिए अधिक अनुपयुक्त आनन्दित करने वाले व्यवसाय चयन क्रम में विधिवेता (वकील) वैज्ञानिक अभियन्ता अथवा शैल्य क्रिया करने वाले चिकित्सक का कार्य भी अनुकूल होगा। वैसे व्यवसायों में सामाजिक कार्यों से सम्बंधित यथा वैवाहिक कार्य व्यवस्था विदाई समारोह का आयोजन, खेल-कूद की सामग्री का व्यवसाय भी उत्तम रहेगा। इसके अतिरिक्त रेडियो, टी.वी. रत्न एवं स्वर्णाभूषण के व्यवसाय, मोटर पार्ट की दूकान आदि आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपकी शारीरिक बनावट उत्तम हृष्ट-पुष्ट मजबूत एवं आपकी आंखे आकर्षक हैं। आप अपने आश्चर्यजनक प्रतिभा से सभी को प्रभावित करेंगे। आप अपने सम्पर्क के साथ पार्टनर से समय-समय पर अपेक्षित वस्तुएं प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार आपका जीवन अतिरिक्त प्रत्याशित आसार उत्तम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आपके पास शान्त वातावरण युक्त सुखद गृह होंगे। जहाँ आप, पत्नी एवं सन्तान सहित सुखमय जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके द्वेष युक्त व्यस्तम कार्य सुखमय जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके द्वेषयुक्त व्यस्ततम

कार्यक्रम के अतिरिक्त कभी आपको अपने परिवार की प्रसन्नता हेतु हर हालात में समय निकालना होगा ताकि आपके पारिवारिक सदस्य सन्तुष्ट रहें।

आप शारीरिक रूप से निःसन्देह स्वस्थ रहेंगे। परन्तु आपके लिए ऐसा निर्देश है कि आप कुछ वर्षो के पश्चात् किडनी एवं मुत्राशय की परेशानी एवं मूत्र जनित रोग से आक्रान्त हो सकते है। इस आशंका के प्रति आपको रक्षात्मक कदम उपयुक्त समय पर उठाना ठीक होगा।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

अंको में आपके लिए अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक अनुकूल तथा अंक 1 एवं 8 अंक आपके लिए स्पष्ट रूप से प्रतिकूल है।

आपके लिए रंगों में व्यक्तिगत रूप से पसन्दीदा रंग पीला, हरा एवं सूआपंखी रंग भाग्यशाली है। परन्तु किसी भी दशा में आपके लिए रंग, लाल, काला और नीला रंग प्रतिकूल एवं सर्वथा अनुपयुक्त है।

Diksha

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षीतिज पर मिथुन लग्नोदय काल मिथुन राशि का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस प्रकार आपका जन्म लग्न वर्गोत्तम की श्रेणी में आवद्ध होकर आपके सर्वोतम जीवन को सुनिश्चित करता है।

आप उत्कृष्ट प्राणी समूह के चयनित अद्वितीय सौभाग्यशाली महिला हैं। आप आरामदाय, मधुर एवं संपन्न जीवन का आनंद प्राप्त कर सकेंगी। आप सामाजिक समर्पित एवं कल्याणकारी हैं। आप गरीब एवं जरूरत मंद लोगों की सहायता कर सकती हैं। आपका जन्म लग्न इस बात को सुनिश्चित करता है कि आप अगले जन्म में भी पूर्ण सुविधा संपन्न एवं महान भाग्यशाली महिला होंगी।

आप में अतिशय महत्वाकांक्षा नहीं है। आपको जो कुछ भी प्राप्त होता है, उससे ही संतुष्ट हो जाती है। आप अन्य लोगों की तरह विलाप करने वाली नहीं हैं। आपको अपने परिश्रम का जो भी परिणाम प्राप्त होता है उससे अधिक की अपेक्षा नहीं करती। जो आपके मस्तिष्क को शांति प्रदान करता हैं तथापि कोई संदेह नही कि आप धन प्राप्ति हेतु कुछ भी कार्य-व्यवसाय करती हैं। आप कुशग्र बुद्धि की चालाक महिला हैं। आप अच्छे और बुरे का भेद जानने में सक्षम हैं। आप इच्छानुसार ठीक प्रकार से निश्चितता पूर्वक अच्छी आय का लाभांश प्राप्त करने के लिए समर्पित भाव से कार्य करेंगी।

मुख्यतः आपके जीवन की 25 वें वर्ष की आयु के पश्चात् धनी हो जाएंगी। तब से आपका सवर्णिम काल प्रारंभ होगा।

परंतु मिथुन के प्रभाव से आप समयानुसार अपना व्यवसाय तथा पेशा प्रारंभ हेतु प्रवृत हो सकती हैं। इसलिए यदि आप अनिश्चित लाभ प्राप्त हेतु समय या साधन का दुरुपयोग करेंगी वह अकारण ही बर्वाद हो जाएगा। आप इस प्रकार के विचार पर नियंत्रण रखें तथा अपनी मनोवृत्ति के अनुसार व्यवसाय की तलाश अथवा निश्चितता हेतु दृढ़ निश्चयात्मक प्रवृत्ति का सदुपयोग करे।

आपके लिए उत्तम एवं उपयुक्त व्यवसाय, पत्रकारिता, पुस्तक प्रकाशन, वकालत अध्यापन कार्य, ज्योतिषीय कार्य तथा किसी धार्मिक संगठन के प्रधान पद पर नियोजित होकर, लाभ प्राप्त करेंगी।

आप में निःसंदेह यह गुण विद्यमान है कि आप कई कार्यों को एक ही समय पर संपादन कर सकती हैं। परंतु निश्चित समय पर किसी एक ही कार्य का संपादन करें। परंतु उत्तम तो यह है कि आप एक निश्चित कार्य की ओर परिवर्तित होकर एक समय में एक ही कार्य में संलग्न हो जाएं।

आप चतुर, तीक्ष्ण बुद्धि की प्रतिभा संपन्न हैं। आप आकस्मिक घटनाओं के संबंध में सकारात्मक प्रतिक्रिया पर निर्भर हो सकती हैं। इस प्रकार अनेक व्यक्ति परिस्थितिवश आपके पास पहुंच कर, आपका निर्देश प्राप्त करने के लिए आप पर दबाव डाल कर किस प्रकार लाभ प्राप्त हो ऐसी राय आप से लेगा।

आप लंबी, दुबली आकृति की, पैनी दृष्टि से युक्त एवं अति प्रसिद्ध महिला हैं। आप विपरीत योनि के प्रति बहुचर्चित होकर संबंधित पुरुषों के साथ वासनात्मक व्यभिचारिक संबंध रखेंगी।

आप ऐसा नही चाहेंगी कि आपका पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए। अतः आपको इस मनोवृत्ति को त्यागना होगा।

जबकि आप अपने पति एवं संतान को प्यार करती हैं तथा आपको प्रसन्नतम गृह व्यवस्था उपलब्ध है फिर घर से बाहर वासानात्मक संतुष्टि क्यों चाहती हो। आपका स्वास्थ्य उत्तम एवं पूर्ण अनुकूल रहेगा। परंतु आपको संभवित रोगादि के प्रति रक्षात्मक प्रक्रिया प्रारंभ करनी होगी ताकि अधिक आयु में कर्ण समस्या उदर की प्रतिकूलता तपेदिक रोग तथा श्वासनली की गड़बड़ी एवं संबंधित रोगादि से पीड़ित न हों।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 3 एवं 7 अंक अनुकूल एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त दो अंक 4 एवं 8 अंक आपके लिए अनुकूल नहीं है।

आप सफेद रंग के प्रति आकर्षित रहती हैं। परंतु सुंदर एवं उन्नति कारक रंग गुलाबी हरा, नीला, पीला एवं बैगनी रंग है। रंग काला एवं लाल रंग त्यागनीय है।

Mohit

आपका जन्म मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, योनि मूषक, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "मे" से प्रारम्भ होगा यथा- मेहर सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हें। यद्यपि चतुर्थ चरण में पैदा होने से इसका अशुभ फल न्यून होता हैं। तथापि सावधानी वश इसकी शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य जन्म समय में ही सम्पन्न होना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 28वें दिन पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। यह समस्त कार्य शास्त्रोक्त विधि विधान तथा योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करना चाहिए। ऐसा करने से जातक जीवन में सुख तथा आनन्द को प्राप्त करता हैं।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने सम्पूर्ण जीवन काल में धनैश्वर्य तथा सेवकों से युक्त रहेंगे। धन की न्यूनता से आप कभी भी व्याकुल नहीं रहेंगे साथ ही समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करने वाले होंगे। आप देवताओं तथा माता पिता के प्रिय भक्त होंगे तथा श्रद्धाभाव से इनकी सेवा करेंगे। साथ ही हमेशा उद्योग में तत्पर भी रहेंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अपने श्रेष्ठ तथा वृद्धजनों के प्रति आपका असीम सेवा भाव रहेगा। आप साहस भरे कार्यों को करने में अति उत्सुक रहेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। फलतः आप सेना या पुलिस में कोई उच्चपद को प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहेंगे।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

पल प्रति पल में ही रूप परिवर्तन करने की कला में आप अत्यन्त निपुण होंगे।

उत्सवों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही लगाव तथा उत्सुकता रहेगी अतः आप इनके आयोजनों में पूर्ण सक्रियता से भाग लेगे तथा तन मन धन से अपना सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही आप सामान्य जनता के कोई उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

आपके मन में कठोरता की बहुलता रहेगी तथा स्वभाव से भी आप उग्र रहेंगे। विद्यार्जन तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप पूर्ण रूप से सफलता को प्राप्त करेंगे। आप बुद्धिमान तथा शत्रु को पराजित तथा नष्ट करने में चतुर होंगे। आप हमेशा पुण्य के कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे तथा पापकर्मों में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी। आप कभी कभी अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा स्त्री वर्ग के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अपने समाज से आप पूर्ण मान सम्मान तथा आदर को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

Diksha

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि नकुल, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग सिंह तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का पहला अक्षर "जी" या "जि" से प्रारम्भ होगा।

आप समाज में एक गणमान्य महिला होंगी तथा सभी सामाजिक जन आपको यथा योग्य आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप हमेशा सत्वगुणों से युक्त होकर अपना सांसारिक व्यवहार निभाएंगी एवं आपात काल में भी किसी भी प्रकार से विचलित न होकर शान्त भाव से उनका सामना करेंगी तथा समाधान करने में भी सक्षम रहेंगी। आपको जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी एवं आनन्दपूर्वक आप इन सबका उपभोग करेंगी। आप एक धनाढ्य महिला रहेंगी तथा धन सम्पति से सुशोभित होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपको विविध शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान भी रहेगा। अतः एक विदुषी के रूप में भी आप ख्याति अर्जित करेंगी एवं विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप सफल एवं समर्थ रहेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

आप दूसरे लोगों से हमेशा विनम्र व्यवहार रखेंगी। अतः सभी लोग आपकी विनय शीलता से प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आपके मन में धर्म के प्रति भी निष्ठा का भाव रहेगा तथा

धार्मिक कृत्यों को आप प्रयत्नपूर्वक सम्पन्न करेंगी एवं धर्मानुपालन में नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। समाज में आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी रहेगी एवं किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उसके उपकार को पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगी तथा उसके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। इसके अतिरिक्त आप समाज में सभी वर्गों के मध्य लोकप्रिय रहेंगी एवं समान रूप से सबको अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

आपका कद दीर्घ एवं स्थूलता से युक्त रहेगा साथ ही आप शौर्य गुण से सम्पन्न होकर साहस एवं निर्भयता से अपने सम्पूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपके सभी शत्रु आपसे पराजित दौरान आपकी- विरोध करने में अपने आपको वे स्वयं को असहाय सा महसूस करेंगे। साथ ही विवाद या कलह आदि में भी आप प्रायः विजय को प्राप्त करेंगी।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

आप स्वभाव से ही दानशीलता की प्रवृति से सुसम्पन्न रहेंगी एवं समय समय पर यथा शक्ति अन्य जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। सत्कार्यों को करने की आपकी नैसर्गिक प्रवृति रहेगी तथा आपके इन सत्कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपसे पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा एवं लोग भी हृदय से आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे। आप धनैश्वर्य से भी प्रायः युक्त रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुखी रहेगा एवं पुत्र आदि संतति से आप सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता भी आकर्षक रहेगी परन्तु कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति से अन्य लोगों को असन्तुष्ट भी करेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

Mohit

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से उग्र तथा तेजस्वी होंगे। आपके कपोल तथा मुखमंडल विस्तीर्ण रहेंगे तथा आखे पीतवर्ण से युक्त छोटी होंगी। आप वन तथा पर्वतों की गुफाओं में भ्रमण करने के लिए उत्सुक रहेंगे कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र कोधित भी हो जाएंगे। आप जीवन में मानसिक चिन्ताओं से ग्रसत रहेंगे। आप में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का भी आप पालन करते रहेंगे। आप यदा कदा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे। माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। स्त्री वर्ग में आप खास रूचि का प्रदर्शन नहीं करेंगे। आपकी सन्तति में पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी तथा धैर्य पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगन कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरूजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां पुष्ट तथा सुडौल होंगी तथा शरीर में रोग भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेंगे। आपका कंठ भाग स्थूल रहेगा तथा स्वाभाविक उग्रता आपके स्वभाव में विराजमान रहेगी। कार्यारम्भ से पूर्व आप कोई न कोई ध्वनि अपने मुंह से अवश्य निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा देखने में आकर्षक रहेगा। समाज में आप एक पराक्रमी पुरूष समझे जाएंगे। तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अत्यन्त चौकस प्रवृति के होंगे तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व सम्पूर्ण परिस्थितियों का गम्भीरता से अध्ययन करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररूदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताती क्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी दृढ तथा मोटी होगी तथा मुखाकृति भी विशाल दृष्टिगोचर होगी। आप माता के प्रिय वत्सल रहेंगे तथा उनकी पूर्ण सेवा शुश्रूषा में तत्पर रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप पेट भर धनार्जन से सन्तुष्ट तथा शान्ति की अनुभूति करेंगे। आपका स्वभाव अमर्षपूर्ण तथा मांस का लोभी होगा। आप पर्वतों तथा पहाड़ों के भ्रमण के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगे।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशील प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करने को प्राथमिकता प्रदान करेंगे। आप अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा आलस्य की हमेशा उपेक्षा करने वाले होंगे। आप अधिकांश समय देश विदेश की यात्रा करने में व्यस्त रहेंगे। शीत से आपको अधिक डर लगेगा। समाज में अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार विनयशीलता से युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही माता पिता से आपका विशेष प्रेम तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। आप कई व्यसनों के भी करने वाले होंगे। आप अपने समाज में एक यशस्वी तथा कीर्तिशाली पुरुष होंगे तथा सामाजिक सम्मान से सर्वथा युक्त रहेंगे साथ ही आप अच्छे तथा गुणवान मित्रों के भी मित्र होंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें तथा शारीरिक सरंचना अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोहर होगी। आपकी दृष्टि गम्भीरता से युक्त रहेगी तथा गम्भीरतापूर्वक परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद ही आप किसी कार्य को प्रारम्भ करेंगे। साथ ही आप जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, ववकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति हो रही हो अथवा व्यापार नौकरी पदोन्नति अथवा अन्य कार्यों में सफलता न मिल रही

हो या अन्य बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य भगवान को अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना भी करनी चाहिए। इसके साथ ही रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ फलदायक रहेगा एवं लाल वस्त्र, लाल फूल, सोना, माणिक्य, गुड़, गेहूं इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

Diksha

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक कद दीर्घ तथा ललाट विस्तृत रहेगा। आपकी आखें सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में परिश्रम करने से आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी। ठण्ड से आप अत्याधिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा इसको सहन करने में असमर्थ सी रहेंगी। सत्य का अनुपालन करने के लिए आप जीवन में सर्वदा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगी एवं प्रयत्न पूर्वक इसका भी अनुपालन करेंगी परन्तु इसमें बाह्य प्रदर्शन की भी प्रमुखता रहेगी। आपका सामाजिक जीवन सम्मान पूर्वक व्यतीत होगा तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन अन्य जनों के समक्ष करेंगी। साथ ही अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के प्रति आपके मन में आकर्षण भी रहेगा एवं उन्हीं से आपके अधिकांश मित्रतापूर्ण संबंध भी रहेंगे। लेखन कार्य में रूचि होने के कारण आप कविता सृजन में सफलता अर्जित कर सकेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति लोलुपता से भी युक्त रहेगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने परिवार के भरण पोषण में सर्वदा व्यस्त रहेंगी तथा अधिकांश परिवारिक समस्याओं में ही उलझी रहेंगी। आप दूसरे लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही उस पर आचरण करने के लिए भी उद्यत होगी। इससे आप कभी कभी कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। आप में आलस्य का भाव भी कभी कभी प्रबल रूप में उत्पन्न होगा। परन्तु आप एक भाग्यशाली महिला होंगी जिससे आपके कई महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से स्वतः ही भाग्यबल से सिद्ध हो जाएंगे। यात्रा एवं भ्रमण में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अधिकांश समय इन में ही व्यतीत करेंगी। आप में शारीरिक बल मध्यम रूप से रहेगा तथा साहसी प्रवृति होने के कारण अगम्य स्थानों एवं कठिन कार्यो को करने की ओर आपकी विशेष रूचि तथा प्रकृति रहेगी। कभी कभी आप में दया एवं करूणा के भाव का अभाव भी

दृष्टिगोचर होगा। इसके अतिरिक्त वातोत्पन्न रोगों से आप जीवन में कई बार कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा सर्वदा सत्वगुणों से सुसम्पन्न रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आपको परिवारिक सम्मान सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा परन्तु कुल परम्परा तथा मर्यादा का अभिवर्द्धन एवं पालन करने में आप सर्वदा तत्पर तथा प्रयत्न शील रहेंगी। आपका अपने पति पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार एवं निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में आप सफल होंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। सुन्दर एवं भद्रपुरूषों के द्वारा नित्य आपकी प्रशंसा की जाएगी। माता के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा पुत्रादि सन्तानों से आप सुसम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। अतः उनके द्वारा आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। धन वैभव का भी आपके पास अभाव नही रहेगा। साथ ही नैसर्गिक रूप से त्याग की भावना आप में विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का भी आप अनुपालन करेंगी। आपके सेवक गण सुन्दर एवं गुणवान रहेंगे एवं आदर पूर्वक आपकी सेवा करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप का परिवार भी विस्तृत होगा। आप सुख को प्राप्त करने के लिए नित्य चिन्तित सी रहेंगी एवं उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी करती रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या किसी संबंधी की धन सम्पत्ति को अपने जीवन में प्राप्त करेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। अन्य जनों की भलाई के लिए आप सतत चिन्ताशील रहेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक उनके कल्याण कारी कार्यों को करती रहेंगी। साथ ही सलाह अथवा मंत्रणा आदि कार्यों में भी आप दक्ष रहेंगी। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगी तथा हमेशा उनको सहयोग प्रदान करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में शौर्यगुण की भी प्रधानता रहेगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।

आप संगीत शास्त्र की अच्छी ज्ञाता होंगी एवं इस क्षेत्र में विशेष योग्यता सफलता तथा ख्याति अर्जित करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी। आपका सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।

जातका भरणम्

आपके लिए वैसाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनिकरण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, वैधृतियोग, शकुनिकरण तथा रोहिणी नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु लोहा, कम्बल, तिल, तेल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Mohit

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रूचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति उनके मन में आकर्षण की प्रबलता रहती है। वे भाग्यशाली भी होते हैं तथा उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रूचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जाने जाएंगे। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं साहित्य के प्रति आपकी विशेष रूचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगे। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति होंगे।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगे तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगे श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रूचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगे।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित

करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

Diksha

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विग्रम शांत एवं हास्य प्रवृति से युक्त होते है। वे बुद्धिमान होते है तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी महिला होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरूचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। इससे समाज में आपके मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगी।

मित्रों के प्रति आपके पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपके विशेष रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगी।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके वाणी भी मधुर होगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगी। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित महिला समझी जाएंगी।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगी तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप एक सुशील महिला होंगी तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगी। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित महिला के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Mohit

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते है।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रूचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

Diksha

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भावुक प्रवृति की होंगी तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। समाज में आप एक सम्मानीया महिला रहेंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी स्पष्ट एवं मधुर रहेगी जिससे सम्मुख व्यक्ति आपसे प्रभावित रहेगा। साथ ही अपने विचारों को बिना किसी असुविधा के अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे ।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आपकी उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की समय समय पर प्राप्ति होती रहेगी। आप सामान्यतया सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करने में रूचिशील रहेंगी लेकिन मिष्ठान आपका विशेष प्रिय रहेगा परन्तु इसके अधिक उपयोग से आपको कोई शारीरिक परेशानी भी हो सकती है अतः इसका अधिक मात्रा में उपयोग कम ही करें। परिवार में आप समय समय पर धार्मिक या मांगलिक उत्सवों का भी आयोजन करती रहेंगी। आप अपने विचारों की पुष्टि के लिए हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित तथा सहमत रहेंगे। पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा तथा सहयोग में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Mohit

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूंजी निवेश कर सकते हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे।, आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको से ससम्मान उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

Diksha

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी स्वगृही होकर चतुर्थभाव में ही स्थित है। यद्यपि नैसर्गिक पापग्रह राहु के प्रभाव से परिश्रम एवं विलम्ब से सुख संसाधन एवं भौतिक उपकरणों की प्राप्ति होती है परंतु कन्या राशि में राहु स्वगृही माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होंगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप एक भाग्यशाली एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। नाना या नानी से भी आपको न्यूनाधिक रूप ने चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। लेकिन आपको कभी भी विवादित सम्पत्ति का क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए तथा न ही उसे स्वीकार करना चाहिए अन्यथा आपको समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

आप जीवन में उत्तम गृह को प्राप्त करेंगी तथापि प्रारम्भ में मध्यम घर में भी रहना पड़ सकता है। आपका घर सुन्दर एवं आकर्षक होगा एवं भौतिक उपकरणों से सुन्दर सुसज्जित होगा। इसके आकर्षण का आप पूर्ण ध्यान रहेंगी। आपका घर किसी अच्छे स्थान में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में मधुरता कम ही रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन भी आपके पास होगा तथा मध्यावस्था के उपरांत इसका सुखपूर्वक उपयोग करेंगी।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा अपने कार्य कलापों से पारिवारिक जनों को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने में सफल होंगी। यदा-कदा वे स्वभाव से उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी परंतु यह अल्पकालिक होगा। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव होगा तथा समय समय पर आपको नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी तथा आप भी अपनी ओर से उन्हे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। लेकिन यदा-कदा सैद्धांतिक मतभेद होने के कारण संबंधों में तनाव हो सकता है।

अध्ययन के प्रति आपकी प्रारंभ से ही रूचि रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको की प्राप्ति करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप परिश्रम से अच्छे अंको में उतीर्ण करने में सफल होंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं संबंधियों से मान सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता अर्जित कर सकती हैं।

नैसर्गिक पाप ग्रह राहु की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको रक्तचाप संबंधी या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः यदि आप युवावस्था से ही खान-पान का उचित ध्यान रखें तथा ऐसे पदार्थो का सेवन कम मात्रा में करें जिससे आपको उपरोक्त समस्याओं का सामना न करना पड़े। इससे आप स्वस्थ होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Mohit

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। ही विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रूचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगे। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढेगी।

पंचमभाव में मकर राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिक्ता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगे। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगे। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगे।

Diksha

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगीं। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगी। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विदुषी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप में रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगी तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Mohit

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है। वह स्वभाव से सौम्य , कर्तव्य परायण एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील होंगी तथा स्वभाव से सौम्य रहेगी। सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रर्दशन करेंगी जिससे यथा समय कार्य पूर्ण होंगे।साथ ही कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौलएवं पुष्ट होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य की वृद्धि के लिए समयानुसार आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगी इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकते है विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ में आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे तथा विवाह के बाद भी उनसे नैतिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अनुकूल रहेगा तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को प्रभावित तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रश्स्त रहेंगे।

Diksha

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा बृहस्पति भी स्वगृही होकर सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया

धनुराशि की स्थिति सप्तम भाव में होने पर जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है। साथ ही बृहस्पति के प्रभाव से वह धार्मिक विद्वान एवं प्रभावशाली होता है तथा जीवन में मान सम्मान से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्यो में दक्ष रहेंगे। उच्च कोटि के साहित्य या धर्म के प्रति वे रूचिशील होंगे तथा उनका अधिक समय इन पर ही व्यतीत होगा। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा एवं परिवार तथा समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे एवं अपनी मृदुवाणी से सबको प्रभावित रखेंगे।

आपके पति सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी ऊंचा होगा उनका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होगा तथा पुष्टता एवं सुडौलता बनी रहेगी। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा। बृहस्पति के जलीय ग्रह होने के प्रभाव से आयु के साथ साथ शरीर में किंचित स्थूलता भी आ सकती है। अतः समय से पूर्व ही व्यायाम योग या अन्य क्रियाओं के द्वारा इस पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपका विवाह परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति या संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम सम्मान एवं समर्पण का भाव रहेगा साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ कार्यो या योजनाओं को आपसी सहमति एवं सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति विश्वास का भाव भी रहेगा जिससे जीवन में आगत समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक समाधान करके आनंद पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

आपका विवाह किसी उच्च परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से वे प्रभावशाली होंगे। सास ससुर के साथ आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे समय समय पर नैतिक सहयोग की प्राप्ति होगी आप भी पितृवत उनका सम्मान करेंगी एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर उनकी सलाह भी अवश्य लेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का पूर्ण सेवा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार तथा मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति उत्तम रहेगी तथा अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी करने में विशिष्ट लाभ एवं उन्नति के योग बनेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Mohit

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना

जीवन यापन करेंगे।

Diksha

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। मीन राशि जलतत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक क्रिया से युक्त होगा तथा इसमें आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी एवं अवसरानुकूल कार्य क्षेत्र में परिवर्तन भी करेंगी लेकिन इससे आपको लाभ एवं उन्नति ही प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

केतु की बृहस्पति की राशि में दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइन्स, खनिज एवं खान विभाग,रासायनिक क्षेत्र, पेट्रोलियम विभाग, राजनीति, बैंक एवं वित्तीय संस्थाएं, प्रशासानिक विभाग, जहाजरानी आदि का क्षेत्र आजीविका की दृष्टि से उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों या विभागों में कार्य करने से आपके उन्नति मार्ग आसानी से प्रशस्त होंगे तथा किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्या या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। इससे आपके मन में सन्तुष्टि होगी तथा ईमानदारी से अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

व्यापारिक क्षेत्र में आप जलोत्पन्न एवं खनिज पदार्थो, लोहे का कार्य, फैक्टरी, ट्रैवल एजेंसी, पेट्रोल पम्प, शेयर ब्रोकर, वित्तीय संस्था, खेती बागवानी एवं भारी उद्योग से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही आपका प्रतिद्वन्दी कमजोर होगा जिससे व्यापार में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी ।

केतु की स्वराशि में दशमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित उन्नति एवं मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को प्राप्त करने में भी सफलता मिलेगी। आप धार्मिक या सामाजिक संस्थाओं में भी किसी पदाधिकारी के रूप में मनोनीत होंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। साथ ही नैसर्गिक क्रूर ग्रह केतु के प्रभाव से मान सम्मान एवं उच्च पद मिलने में विलम्ब होगा या व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी तथा बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता विद्वान, तेजस्वी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से समाज में प्रभावशाली होंगे तथा सभी लोग उन्हें वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा के लिए वे समुचित व्यवस्था करके आपको कार्य क्षेत्र में प्रभावशाली पद या स्तर प्राप्त करवाने में उनका विशिष्ट सहयोग होगा। साथ ही आपको उनके प्रभाव से इच्छित सम्मान एवं आदर भी मिलेगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा उनकी आकांक्षाओं का पूर्ण ध्यान रखेंगी। यद्यपि आपसी

संबंधों में मधुरता रहेगी तथापि यदा कदा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद हो सकता है लेकिन यह क्षणिक होगा।

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2026

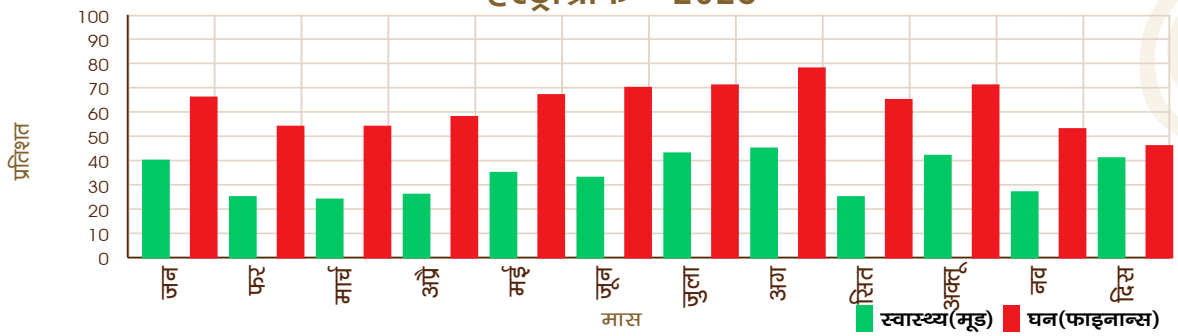

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2026

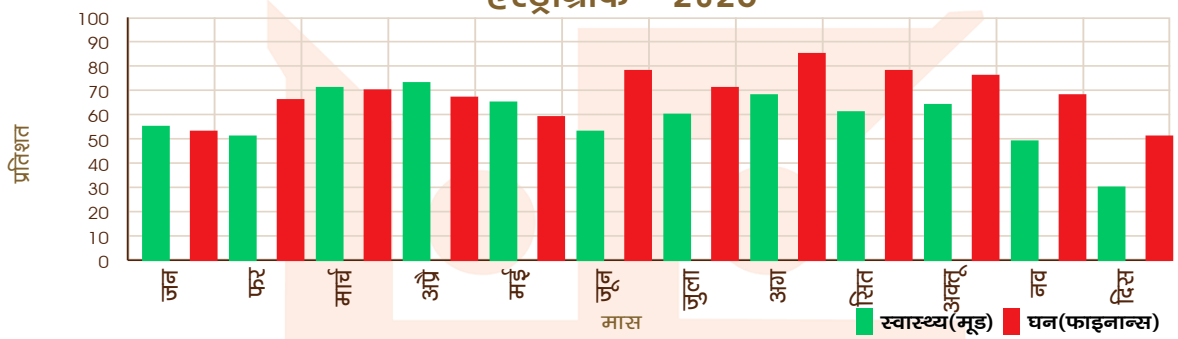

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2027

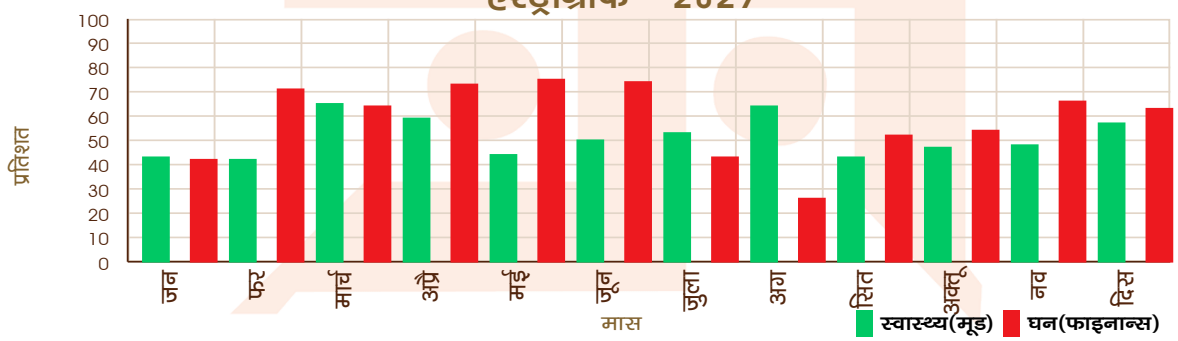

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2027

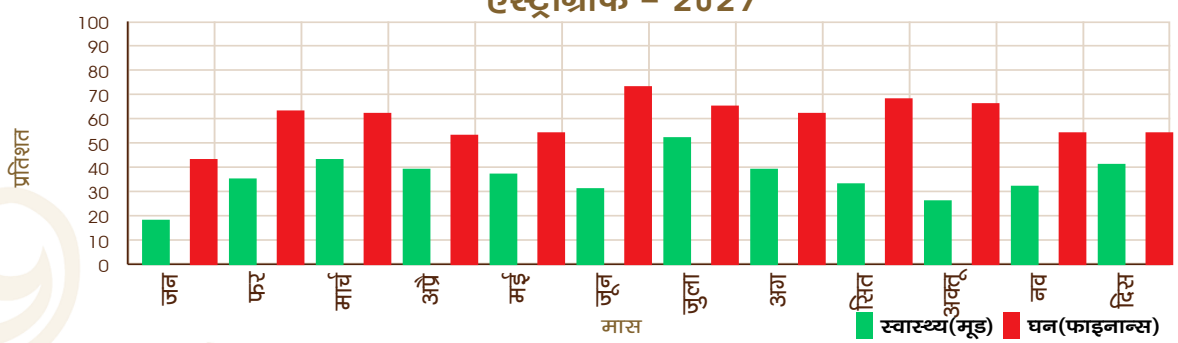

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2028

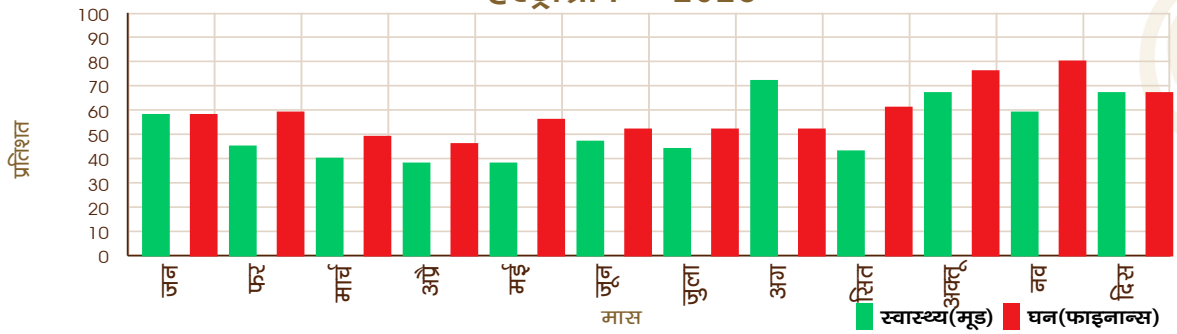

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2028

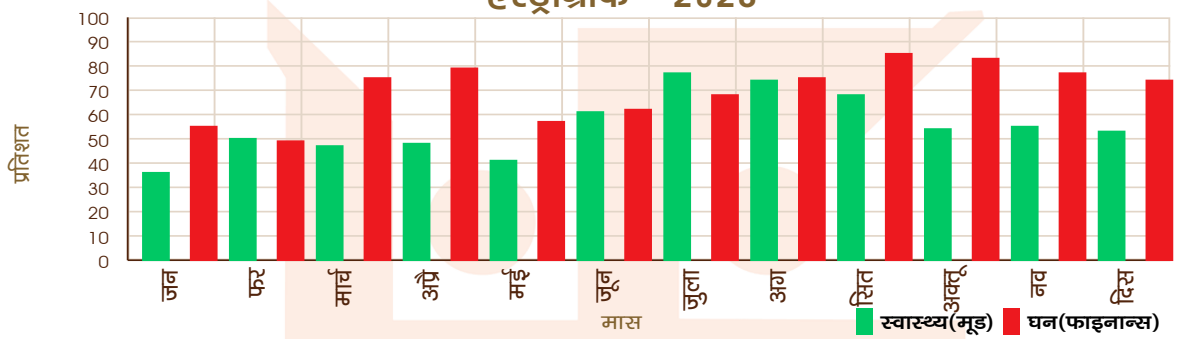

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2029

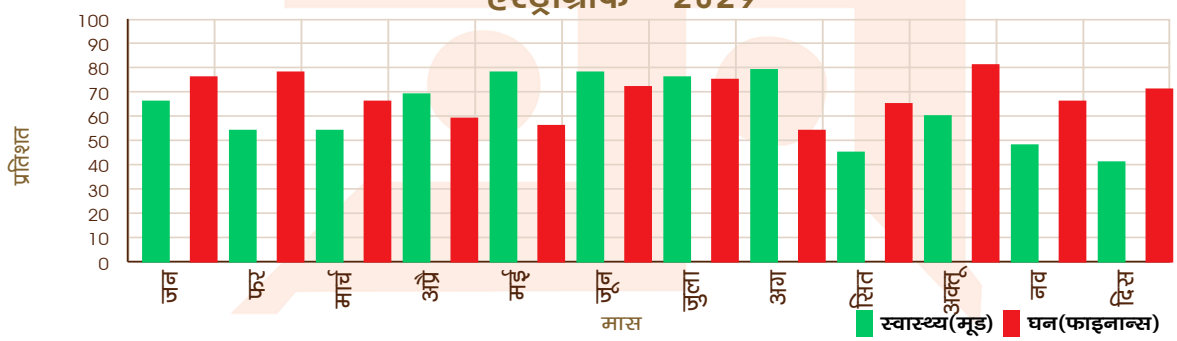

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2029

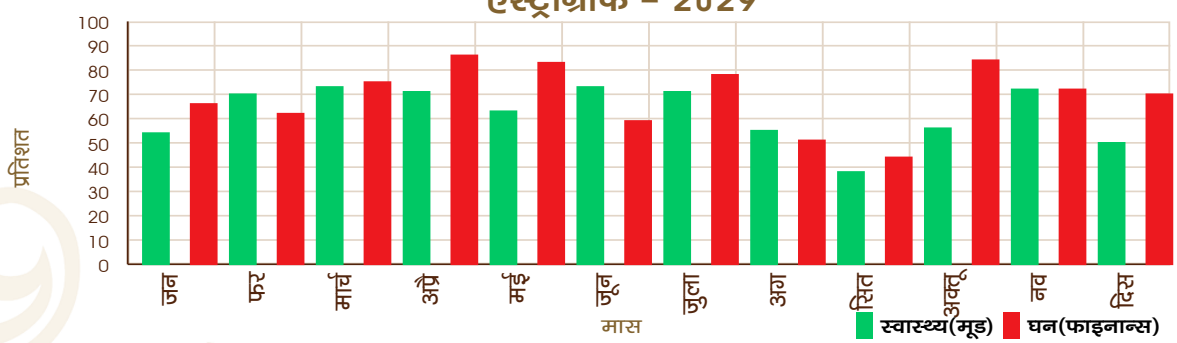

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2030

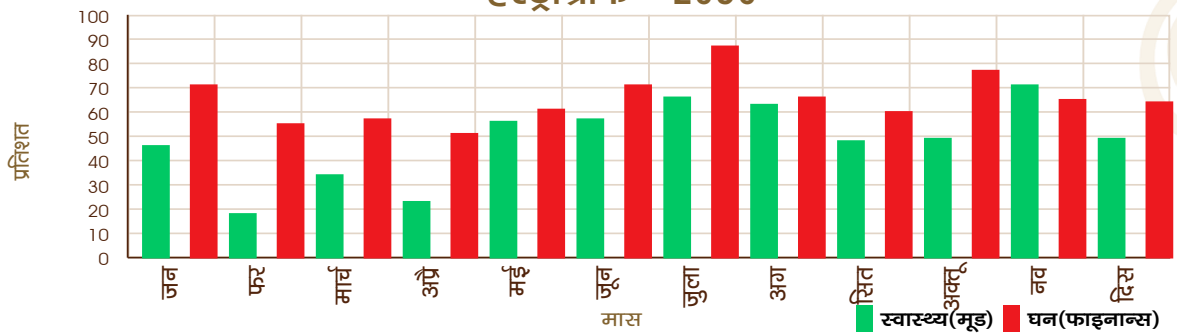

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2030

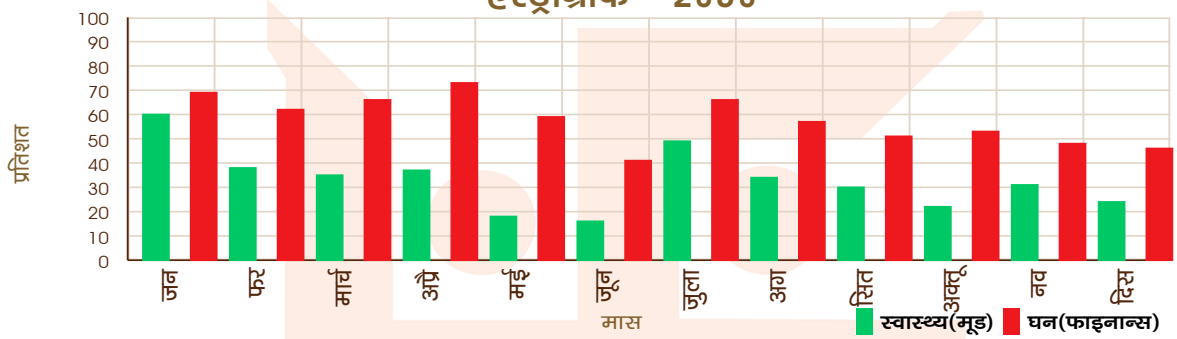

Mohit

एस्ट्रोग्राफ – 2031

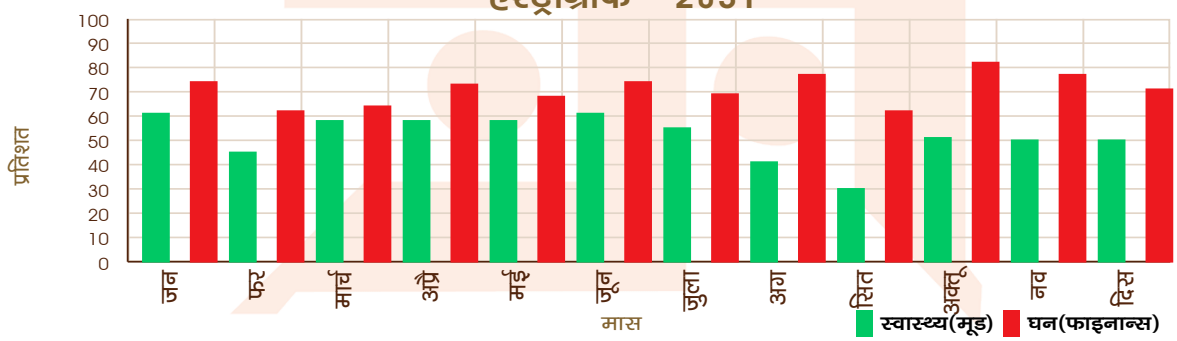

Diksha

एस्ट्रोग्राफ – 2031